



04 - जीवन की तलाश में
संघर्ष की 'नयी राह'



05 - चलती-फिरती नाव और
शार्ल दोबिन्सी की कला

A Daily News Magazine

इंदौर
रविवार, 22 फरवरी, 2026



इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 142, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रु. 2



06 - प्रकृति वास्तव्य गौशाला
की चरनोई मूभि पर उद्योग
विभाग ने की तार...



07 - युद्ध फिल्मों की
सीमा रेखा तोड़ती
'बॉई'

सुबह

subhasaverenews@gmail.com
facebook.com/subhasaverenews
www.subhasavere.news
twitter.com/subhasaverenews



फोटो- बंसीलाल परमार

हमारा ट्रेड आंकड़ा नहीं है, यह भरोसे की झलक है

● पीएम मोदी बोले-लैटिन अमेरिका में ब्राजील भारत का सबसे बड़ा पार्टनर ● लूला बोले-हम दोनों डिजिटल सुपरपावर, रणनीतिक साझेदारी को देंगे नई ऊर्जा



नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा और पीएम मोदी ने शनिवार को हैदराबाद हाउस में द्विपक्षीय बैठक की। इस बैठक में दोनों देशों के प्रतिनिधियों के बीच कई अहम मुद्दों पर बातचीत हुई। राष्ट्रपति लूला के साथ करीब 14 मंत्री और ब्राजील की कंपनियों के टॉप सीईओ का एक बड़ा डेलीगेशन भी बैठक में मौजूद रहा। भारत की ओर से पीएम मोदी के साथ विदेश मंत्री एस जयशंकर, वाणिज्य एवं व्यापार मंत्री पीयूष गोयल, एनएसए

अजीत डोभाल समेत कई अधिकारियों ने इस द्विपक्षीय बैठक में भाग लिया। बैठक के बाद राष्ट्रपति लूला के साथ संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए पीएम मोदी ने कहा, राष्ट्रपति लूला और उनके डेलीगेशन का भारत में स्वागत करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह ट्रेड सिर्फ एक आंकड़ा नहीं बल्कि भरोसे की झलक है। पीएम बोले आपने पिछले वर्ष मेरा ब्राजील में जिस तरह स्वागत किया था, मैं उसी तरह आप सभी का अभिनंदन करता हूँ।

ब्राजील के प्रेसीडेंट लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा ने कहा, मेरे प्यारे दोस्त प्रधानमंत्री मोदी, छठी बार इस देश में वापस आना मेरे लिए खुशी की बात है। भारत और ब्राजील के बीच मीटिंग बहुत बढ़िया मीटिंग है। हम सिर्फ ग्लोबल साउथ की दो सबसे बड़ी डेमोक्रेसी नहीं हैं। यह एक डिजिटल सुपरपावर और एक रिन्यूएबल एनर्जी सुपरपावर की मीटिंग है। हम दोनों ही बहुत अलग-अलग तरह के देश हैं और कल्चरल इंडस्ट्री के हब हैं और हम दोनों ही मल्टीलेटरलिज्म और शांति की रक्षा करते हैं। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला का ये दौरा 18 से लेकर

को लेकर ईएम ने एक्स पर लिखा, भारत के राजकीय दौरे पर आए एआई इम्पैक्ट समिट को लेकर ईएम ने एक्स पर लिखा, भारत के राजकीय दौरे पर आए ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा से मिलकर सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। हमारी रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए उनकी गर्मजोशी भरी भावनाओं और गाइडेंस की बहुत तारीफ करता हूँ।

2026 में भी शामिल हुए। द्विपक्षीय बैठक के अलावा प्रेसीडेंट के सम्मान में एक डिनर होस्ट करेंगी। इससे पहले लूला ने भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर से मुलाकात की। मुलाकात

को लेकर ईएम ने एक्स पर लिखा, भारत के राजकीय दौरे पर आए ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डा सिल्वा से मिलकर सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। हमारी रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए उनकी गर्मजोशी भरी भावनाओं और गाइडेंस की बहुत तारीफ करता हूँ।

कई फील्डों में सहयोग बढ़ाने पर बनी सहमति- पीएम मोदी ने आगे कहा, मुझे खुशी है कि हम ब्राजील में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाने पर काम कर रहे हैं। हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सुपरकंप्यूटर, सेमीकंडक्टर और ब्लॉकचेन जैसे एरिया में भी अपने सहयोग को प्रायोरिटी दे रहे हैं। दोनों देशों का मानना है कि टेक्नोलॉजी सबको साथ लेकर चलने वाली होनी चाहिए और शेयर्ड प्रोग्रेस के लिए एक ब्रिज बननी चाहिए।

रिन्यूएबल एनर्जी, इथेनॉल पर बढ़ती भागीदारी- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, एनर्जी कोऑपरेशन हमारे रिश्ते का एक मजबूत स्तंभ रहा है। हाइड्रोकॉर्बन के साथ हम रिन्यूएबल एनर्जी, इथेनॉल ब्लेंडिंग और सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल जैसे कई एरिया में भी कोऑपरेशन बढ़ा रहे हैं। ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस में ब्राजील का ऐक्टिव पार्टिसिपेशन ग्रीन फ्यूचर के लिए हमारे शेयर्ड कमिटमेंट को दिखाता है। ब्राजील ने डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए कोएलेशन की को-चेयर करने का भी प्रपोजल दिया है। मैं इस इनिशिएटिव के लिए प्रेसिडेंट लूला को बधाई देता हूँ। इस एरिया में ब्राजील का बड़ा एक्सपीरियंस समझौते को और मजबूत करने में मदद करेगा।

सुपभात

तुम उसे तस्वीर से हटा दोगे?
रंगों से भरी उसकी हंसी को पोंछ दोगे
किसी कवि की कल्पनाओं के
बगीचे जैसे
खिले-खिले उसके चेहरे पर
पोत दोगे अपनी कुत्सित
कामनाओं की कालिख?

लेकिन कैसे गायब करोगे
उसकी मौजूदगी को
जो बिखरी हुई है आसपास
दीवार पर एक साये की तरह
हवा में खुशबू की तरह
पेड़ों के पत्तों की सरसराहट की तरह

तुम उसकी आवाज को दबा दोगे
बंद कर दोगे उसकी जुबान
लेकिन कैसे रोकोगे उस गीत को
जिसे वह गाती तो अपने मन में है
लेकिन जिसकी गूंज
चौरपटा सुनाई पड़ती है
जो हर चुप्पी में बोलती है

तुम कागज से मिटा दोगे उसका नाम
फेर दोगे उस पर स्याही
उसकी पहचान को गायब
कर देना चाहोगे
लेकिन कैसे मिटा सकोगे
उसकी यादों को
जो दर्ज हैं स्मृतियों के दस्तावेजों में
बैठी हुई हैं लोगों के दिलों में
घर किए हुए हैं उनकी धड़कनों में

तुम उसे तस्वीर से हटा सकते हो
उसकी आवाज को दबा सकते हो
तुम कुचल सकते हो सभी फूलों को
लेकिन बसंत को आने
से नहीं रोक सकते।

- पूजा सिंह

देशभर में प्रदर्शन

कांग्रेस के खिलाफ सड़क पर बीजेपी

● राहुल को काले झंडे दिखाए, यूथ कांग्रेस के खिलाफ निकाली भड़स
पुलिस बोली-समिट में हंगामा करने वाले 5 दिन की पुलिस रिमांड पर



नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के एआई समिट में हंगामा करने के विरोध में भाजपा शनिवार को दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, तेलंगाना और जम्मू-कश्मीर में प्रदर्शन किया। दिल्ली में कांग्रेस कार्यालय के बाहर भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता 'कांग्रेस+राहुल गांधी=गद्दार', 'देशद्रोही राहुल गांधी माफी मांगे' के पोस्टर लेकर विरोध किया। मुंबई के मुलुंड में भाजपा कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी के काफिले को काले झंडे दिखाए। गुजरात के सूरत में भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध

प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस का पुतला जलाया। जम्मू-कश्मीर में भी भाजपा कार्यकर्ताओं ने विरोध जताया। बिहार के पटना में कांग्रेस का पुतला जलाया गया। इधर दिल्ली के पटियाला कोर्ट में एआई इम्पैक्ट समिट में हंगामा करने वाले 4 आरोपियों को पेश किया गया। पुलिस ने कहा ये सभी नेपाल के जेन जेड आंदोलन से प्रेरित थे। प्रदर्शन एक बड़ी साजिश का हिस्सा था। हंगामे के दौरान कई ग्लोबल लीडर्स और टेक इंडस्ट्री के एक्सपर्ट वहां मौजूद थे। पुलिस ने कहा कि हमें जांच करने है कि

आरोपियों ने पीएम मोदी के चेहरे वाली टी-शर्ट पहनी थी, उसे किसने फिट कराया। इन सभी के मोबाइल रिकवर करने की भी जरूरत है। इसके बाद ज्युडिशियल मजिस्ट्रेट रवि ने सभी चार आरोपियों 5 दिन की पुलिस रिमांड में भेज दिया। भारत मंडपम में यूथ कांग्रेस ने हंगामा किया 20 फरवरी को दिल्ली स्थित भारत मंडपम में इंडियन यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को एआई समिट 2026 में भारत-अमेरिका ट्रेड डील के खिलाफ प्रदर्शन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सेवदा में दी दतिया जिलेवासियों को 529 करोड़ रूपए से अधिक के 71 विकास कार्यों की सौगात विकास, नवाचार और किसान समृद्धि का रोल मॉडल बन रहा दतिया : मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि दतिया वीरता और भक्ति का अद्भुत संगम है। यहां आस्था और प्रगति का उज्ज्वल संगम है। हमारी सरकार दतिया के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रही है। विगत वर्ष बुंदेलाल काल के दतिया महल और गुज्जरा लघु शिलालेख को यूनेस्को की टेंटेटिव सूची में स्थान मिल गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया जिले की विकास यात्रा अब रुकने वाली नहीं है। आज दतिया विकास, नवाचार, महिला सशक्तिकरण और किसान समृद्धि का एक रोल मॉडल बन गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया में एयरपोर्ट के शुभारंभ के साथ दतिया से भोपाल फ्लाइट भी शुरू हो गई है। खजुराहो से नई दिल्ली तक बंदे भारत ट्रेन के जुरिए दिल्ली लौटने के लिए दतिया से चंद घंटों की दूरी पर आ गया है। उन्होंने कहा कि दतिया में मां पीताम्बरा लोक का निर्माण तेजी से प्रगति पर है। इससे जिले के पर्यटन को नए पंख लगेंगे और दतिया को एक नई धार्मिक एवं आध्यात्मिक पहचान भी मिलेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को दतिया जिले के सेवदा तहसील मुख्यालय में 529 करोड़ लागत के 71 विभिन्न विकास कार्यों के लोकार्पण एवं भूमि-पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घोषणा करते हुए कहा कि करीब सदा 2 हजार करोड़ रूपए की लागत वाली रतनगढ़ सिंचाई परियोजना से इस क्षेत्र के 40 हजार से अधिक किसानों को सिंचाई सुविधा का लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दतिया जिले के नशामुक्ति कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस पुनीत कार्य के लिए जिलेवासियों को बधाई दी।



केन-बेतवा राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना का दतिया के किसानों को मिलेगा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कभी पेयजल संकट से जूझने वाला दतिया में आज हर घर में नल से जल पहुंच रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन-बेतवा राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना पर काम चल रहा है। इसका भरपूर लाभ दतिया जिले के किसानों को भी मिलेगा। अब किसानों को सिंचाई के लिए पानी की चिंता करने की जरूरत नहीं है। दतिया जिले में 1.48 लाख हैक्टेयर से अधिक भू-रकबे में सिंचाई सुविधा का विस्तार होने से यहां कृषि उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई है। विगत दो सालों में यहां 7 लघु सिंचाई परियोजनाओं का निर्माण हुआ है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ जिले के 1.37 लाख से अधिक किसानों को मिल रहा है। फसल बीमा योजना यहां के 1.26 लाख से अधिक किसानों का सुरक्षा कवच बनी है।

धोखेबाज कालरा पर ठगी का नया केस

इंदौर। लज्जरी कारें किराए पर लेकर उन्हें गिरवी रखने और गायब करने के आरोपों से घिरे संजय कालरा की मुश्किलें लगातार बढ़ती जा रही हैं। अन्रपूर्णा थाने में उसके खिलाफ धोखाधड़ी का एक और केस दर्ज किया गया है। कबीरखेड़ी निवासी राजकुमार मंडलोई ने बताया कि उन्होंने अपनी कार अनुबंध के तहत कालरा को किराए पर दी थी। समझौते के अनुसार तय समय पर किराया देना और वाहन सुरक्षित लौटाना था, लेकिन आरोपी ने न तो भुगतान किया और न ही कार वापस की। जांच में सामने आया है कि कालरा ने अपने साथी शावेज के साथ मिलकर साजिश के तहत वाहन को ठिकाने लगा दिया। हाल ही में रावजी बाजार पुलिस ने भी वर्ष 2019 के एक मामले में कार्रवाई करते हुए केस दर्ज किया है। स्क्रीम नंबर 71 निवासी ब्रजेश मंत्री ने आरोप लगाया था कि कालरा ने उनका वाहन हड़पने के बाद उन्हें जान से मारने की धमकी दी थी। पुलिस अब तक कालरा की निशानदेही पर 38 लज्जरी कारें बरामद कर चुकी है।

ट्रैफिक पुलिस की पेट्रोलिंग तेज

इंदौर। ट्रैफिक व्यवस्था को अधिक सुचारू और व्यवस्थित बनाने पुलिस ने नो-पार्किंग के विरुद्ध अभियान शुरू किया है। इसके तहत चारों जोंम में पेट्रोलिंग टीमों का गठन किया गया। इन टीमों का उद्देश्य व्यक्त मार्गों, प्रमुख बाजारों और अधिक यातायात दबाव वाले क्षेत्रों में अव्यवस्थित पार्किंग पर नियंत्रण स्थापित करना है। निर्धारित क्षेत्रों में भ्रमण कर टीमों ने नो-पार्किंग में खड़े वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की। इन क्षेत्रों में चला विशेष अभियान चलाया गया। जोंम-1- कालानी नगर से बड़ा गणपति होते हुए गौराकुंड तक, जोंम-2- मालवा मिल, पाटनीपुरा से भमोरी और रसोमा क्षेत्र, जोंम-3- पलासिया, गीताभवन, व्हाइट चर्च, मनोरा गंज से कृषि कॉलेज तक, जोंम-4- राजवाड़ा, सराफा, कपड़ा बाजार, खजूरी बाजार और भंवरकुआ टॉवर चौराहा तक। पेट्रोलिंग टीमों ने पीए सिस्टम, बाँडी वॉर्न कैमरा, क्रैन, व्हील लॉक और पीओएस मशीन की मदद से कार्रवाई को प्रभावी बनाया।

समाज के सामूहिक विवाह में हेलमेट बाटे

इंदौर। सकल पंच मारू प्रजापति समाज का सामूहिक विवाह सम्मेलन दलाल बाग में 19 फरवरी को हुआ। अध्यक्ष राजू प्रजापति ने बताया कि 43 वर वधुओं का विवाह हुआ। सम्मेलन का आगाज खेमराज सुवटा परिवार ने मां श्री यादे की आरती से आरंभ किया। आचार्य, महाराज एवं अतिथि के सान्निध्य में लान मंडप में चवरी फेरे लिए। मुख्य अतिथि सोनकच्छ के पूर्व विधायक राजेन्द्र वर्मा, लेखा समिति अध्यक्ष योगेश गेन्दर ने युगल जोड़ों को आशीर्वाद के साथ हेलमेट और डस्टबीन दिया। इस अवसर पर दिलीप बोरावड़, मुकेश सडलीवाल, ओम दुरान, प्रकाश जिनादिया, दिनेश लिम्बा, कृष्णा लिम्बा आदि उपस्थित थे।

झूठी अफवाह फैलाने वालों पर कार्रवाई

इंदौर। मानसिक रूप से अस्वस्थ महिला को बच्चा चोर समझकर पिछले दिनों राहगीरों ने पकड़कर भंवरकुआ पुलिस के हवाले कर दिया था। पुलिस द्वारा महिला से पूछताछ एवं आवश्यक सत्यापन करने पर वह मानसिक रूप से विकसित पाई गई। तत्पश्चात् पुलिस ने संवेदनशीलता के साथ कार्रवाई करते हुए महिला की जानकारी सोशल मीडिया के माध्यम से साझा की। इससे उसके परिजनों तक सूचना पहुंची तथा घटना में सम्मिलित व्यक्तियों ने महिला को बच्चा चोर समझ के हाथापाई की गई थी, उनके विरुद्ध पुलिस ने धारा 223 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध किया। उधर, सूचना पर 18 फरवरी को महिला के परिजन थाने पहुंचे। आवश्यक पुष्टि एवं दस्तावेजों कार्रवाई उपरांत 19 फरवरी को महिला को सकुशल उसके परिजन सुंदर पिता किशानलाल निवासी रेलवे रोड पूर्व दीनदयाल नगर मेरठ के सुपुर्द किया गया।

कुमेड़ी बस स्टैंड संचालन में पैव फंसा

इंदौर। करोड़ों रुपए की लागत से इंदौर विकास प्राधिकरण ने कुमेड़ी में अंतर स्टेट बस टर्मिनल (आईएसबीटी) का निर्माण किया था। यहां से विभिन्न रूटों पर 600 से अधिक बसें चलाई जाना प्रस्तावित है। संचालन के लिए पिछले दिनों निर्माण एजेंसी ने टेंडर बुलाए थे। टेंडर में एक कंपनी ने रुचि दिखाई थी, लेकिन प्राधिकरण की शर्तों के चलते कंपनी ने अपने हाथ खींच लिए थे। इसके बाद आईडीए ने नई एजेंसी तय करने दोबारा टेंडर किए हैं। टेंडर आने के बाद बस स्टैंड संचालन का समय तय हो पाएगा। प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालिक अधिकारी डॉ. परिशित झाड़े ने बताया कि व्ययन के तरीकों में बदलाव करते हुए 60 प्रतिशत तकनीकी अनुभव एवं 40 प्रतिशत वित्तीय प्रस्ताव को चयन का आधार बनाया गया है। निविदा में यह भी संशोधन किया गया है कि भविष्य में आईएसबीटी का मालिकाना हक केन्द्र सरकार, राज्य सरकार या किसी उपक्रम को हस्तांतरित किया जाता है तो निविदादाता के साथ अनुबंध की शर्तें यथावत रहेंगी।

कैमरे घुमाकर चेन उड़ाई, कहीं जेवर चुराए, बदमाश कैमरे में

शहर में चोरी की दो बड़ी घटनाएं, सुहद चोरी का पता

इंदौर। शहर में बुधवार-गुरुवार की दरमियानी रात चोरी की दो अलग-अलग वारदातें हुईं। इसमें चोरों ने कहीं कैमरे घुमाकर चेन उड़ाई तो कहीं से जेवर पर हाथ साफ कर दिया। दोनों घटनाओं को अंजाम देने वाले बदमाश कैमरे की नजर में आ गए हैं। पहले मामले में सदर बाजार थाना क्षेत्र में हनुमान मंदिर के पास रहने वाले गौरव कश्यप के घर चोर गैलरी के रास्ते घुसे। बदमाशों को घर में लगे कैमरों की जानकारी पहले से थी। अंदर प्रवेश करते ही सबसे पहले कैमरों की दिशा मोड़ दी। उसके बाद सोने की चेन चुरा ले गए। सुबह परिवार के जागने पर सामान बिखरा मिला और चोरी का पता चला। दूसरा मामला अन्नपूर्णा थाना क्षेत्र के उषा नगर में रहने वाले राजेश सोमानी के सुने मकान को निशाना बनाते हुए अज्ञात बदमाश लाखों रुपए के जेवर लेकर चंपत हो गया। घटना बुधवार रात 10 से 10.30 बजे के बीच की है। चोरी यहां से चार सोने की अंगुठियां, चार कान के टॉप्स, दो कान की चेन, सोने की नथ, चांदी का सेट और 12 पुराने चांदी के ब्रेसलेट ले गए।

ठाग पत्नी ने शिलांग में पति को जहर दिया घर से जेवर-नकदी लेकर प्रेमी संग भागी

वकील पति को पहाड़ से धक्का देने की कोशिश, पहले भी शादी हो चुकी

झूठे केस और धमकी

पति भूपेंद्र ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि तथाकथित भाई शुभम के साथ पिता संतोष सेंगर, मां सरोज, भाई सोनू, उसकी पत्नी नीमा, बहन आरती और उसके पति दीपक ने साजिश रची थी। नवंबर 2024 में उनकी शादी हुई। विवाह के बाद नीलिमा झूठे प्रकरण में फंसाने और आत्महत्या करने की धमकी देने लगी। भूपेंद्र के अनुसार, बहन आरती ने बताया कि नीलिमा पहले पति के साथ केवल सात दिन रही थी। तलाक के दस्तावेज खोजे जाने की बात भी कही गई। शादी के बाद नीलिमा ने हर महीने 20 हजार रुपए देने का दबाव बनाया शुरू कर दिया।

नहीं, बल्कि प्रेमी है और उसका सपनेम गुप्ता है। जब वकील ने ये दस्तावेज पत्नी के सामने रखे, तो वह रात में जेवर और नकदी लेकर फरार हो गईं। इसके बाद वकील ने थाने में शिकायत दर्ज कराई, जिस पर आरोपियों के खिलाफ एफआईआर की गई। शुभम के साथ घंटों कमरे में - पति भूपेंद्र ने पुलिस को दिए बयान के अनुसार, शुभम के घर

आने पर वह घंटों उसके साथ कमरे में रहती थी और लगातार व्हाट्सएप पर चैटिंग करती थी। पूछने पर आत्महत्या की धमकी देती थी। नीलिमा रोज पेनकिलर लेती और सिरदर्द का बहाना करती थी। बाद में घर की अलमारी से उसकी फाइल मिली, जिसमें मानसिक बीमारी के उपचार संबंधी दस्तावेज पाए गए। 3 मार्च 2025 को शुभम, नीलिमा को

होली पर उत्तर प्रदेश ले गया। इस दौरान वह जेवर भी साथ ले गईं। बाद में जानकारी जुटाने पर पता चला कि उसका तलाक ब्यावरा में हुआ था। उसके मुंहबोले मामा से भी प्रेम संबंध होने की बात सामने आई। पहले पति से गर्भपात होने की जानकारी भी मिली, जिसे नीलिमा ने छिपाया था। मार्च 2025 में उत्तर प्रदेश जाने के बाद नीलिमा ने मोबाइल पर यह बातें स्वीकार करते हुए झूठे केस में फंसाने की धमकी दी। पीड़ित ने आरोप लगाया है कि वह घर से करीब 25 तोला सोना लेकर गई है।

शिकायत पर एफआईआर

खुद पुलिस के एसआई सल्येंद्र सिंह सिसोदिया ने वकील को शिकायत पर नीलिमा पुत्री संतोष सेंगर निवासी ग्राम मंडोरी, जिला जालौन और उसके प्रेमी शुभम सेंगर बतों गुरु के खिलाफ तथ्यों को छिपाकर छलपूर्वक केवल आर्थिक लाभ की नीयत से विवाह करने के मामले में धारा 318(4), 303(2), 61(2) बीएनएस-2023 के तहत एफआईआर दर्ज की है।

आरटीओ ने स्कूली वाहनों की जांच की, बिना परमिट स्कूल वाहन जब्त

10 अन्य वाहनों से वसूला गया 56 हजार रुपए का जुर्माना

इंदौर। शहर में स्कूली तथा अन्य वाहनों की चेकिंग का अभियान जारी है। अभियान में आज क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय के अमले ने मांगलिया क्षेत्र के स्कूली वाहनों की सघन जांच की। जांच के दौरान वाहनों के परमिट, फिटनेस, बीमा सहित सभी दस्तावेज चेकिंग के साथ वाहनों का निरीक्षण भी किया गया। फायर सेफ्टी उपकरण, स्पीड गवर्नर की भी जांच की गई। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी प्रदीप शर्मा ने बताया कि इस दौरान एक स्कूली वाहन बिना परमिट के पाई गई, जिसे जब्त किया गया। साथ ही 10 से अधिक वाहनों में विभिन्न कमियां पाए जाने पर मोटर यान अधिनियम के विभिन्न नियमों का उल्लंघन करने पर 56 हजार रुपए से ज्यादा का जुर्माना वसूला गया। साथ ही बच्चों और उनके पालकों से फीडबैक भी लिया गया। उनसे वाहन चालक, वाहन को तेज गति से तो नहीं चलाते है या वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग



तो नहीं करते आदि बिन्दुओं पर फीडबैक लिया गया।

स्कूली वाहनों की आकस्मिक चेकिंग

स्कूल, शैक्षणिक संस्था बसों में सुरक्षा मानकों की पूर्ति सुनिश्चित कराये जाने के लिए जिले में स्थित स्कूली वाहनों की आकस्मिक चेकिंग अभियान निरंतर जारी रहेगा। समस्त शैक्षणिक संस्थान/स्कूल संचालकों को निर्देशित किया जाता है कि वे अपने वाहन पूर्ण रूप से फिट होने एवं उनके समस्त आवश्यक दस्तावेज वैध होने पर ही सर्वोच्च न्यायालय के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए वाहनों को संचालन किया जाना सुनिश्चित करें।

‘रेसीडेंसी’ में राज्यपाल ठहरे तब व्यवस्था बिगाड़ने वाली एजेंसी पर कार्रवाई नहीं

6 अफसरों को नोटिस, व्यवस्था में लापरवाही के असल दोषी को बक्शा

इंदौर। देश का सबसे स्वच्छ शहर इंदौर पिछले कुछ दिनों से कई तरह की नाकामियां झेल रहा है। पहले भागीरथपुरा का दूषित जल और अब रेसीडेंसी कोठी का खराब खाना। इन दोनों मामलों ने इंदौर की छवि को धूमिल कर दिया। भागीरथपुरा के दूषित पानी के बाद देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर को एक दाग और लग गया। यहां ठहरे राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने गंदगी और खराब खाने से नाराज होकर रेसीडेंसी में खाना खाने से इनकार कर दिया। राज्यपाल के ओएसडी और एडीसी ने स्वयं आंखों से गंदगी देखी और राक्षपाल को रिपोर्ट की। लेकिन, प्रशासन ने सिर्फ ‘रतन सिक्वोरिटीज’ का अनुबंध निरस्त किया, उस पर कोई कार्रवाई नहीं की, जो होना चाहिए!

सवाल उठ रहा है कि आखिर किसका वरदहस्त है! आखिर वह कौन सी ताकत है जिसने कलेक्टर को उस पर सख्त कार्रवाई करने से रोका है।

6 अफसरों नोटिस दिए- कलेक्टर शिवम वर्मा ने राज्यपाल की व्यवस्था में लगे 6 अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस दिए, पर रतन सिक्वोरिटीज पर कोई सख्त कार्रवाई नहीं की। इससे लगता है कि क्या इसका संचालक रतन अरोरा इतना प्रभावशाली



व्यक्ति है जिस पर कार्रवाई से प्रशासन भी डर रहा है। रतन अरोरा शिवराज सरकार के समय कभी ताकतवर रहे दिलीप सूर्यवंशी का नजदीकी है और इंदौर रेसीडेंसी के अलावा इसके और भी कई सरकारी गेस्ट हाउस और अन्य जगह हाउसकीपिंग के ठेके हैं। इंदौर रेसीडेंसी के रतन सिक्वोरिटी के कर्मचारियों का आरोप है कि उन्हें ढाई साल से वेतन नहीं मिला।

कई वीवीआईपी भी रूक चुके

राज्यपाल की सुरक्षा और प्रोटोकॉल अफसरों ने समय रहते रिश्तित को भाप लिया और राज्यपाल को इससे अलगत करा दिया। किन्तु प्रश्न उठ रहा है कि पूर्व में अनेक वीवीआईपी रेसीडेंसी में आते रहे हैं। क्या उन्हें भी इसी तरह का दूषित खाना परोसा जाता रहा है। क्या इस तरह की गंभीर चूक का सामना उन्हें भी करना पड़ा होगा। अगर ऐसा हुआ है, तो इस असावधानी और गंभीर चूक के दोषी को अब सजा देने में कोताही क्यों की जा रही है। हाउसकीपिंग कंपनी का तर्क है कि उन्हें व्यवस्था संचालित करने के लिए काफी समय से भुगतान नहीं किया गया। पर, क्या यह जवाब इस गंभीर चूक का सही जवाब है?

कारोबारी से 40 लाख रुपए मांगे प्रॉपर्टी विवाद में शिकायत दर्ज

कुख्यात बदमाश भाऊ से समझौता करने का दबाव

इंदौर। प्रॉपर्टी विवाद में समझौते के नाम पर बदमाशों ने कारोबारी से 40 लाख रुपए मांगे। पैसा नहीं देने पर दान से मारने की धमकी दी। द्वारकापुरी पुलिस को फरियादी ऋषि नगर निवासी सौरभ राठौर की शिकायत पर मामला दर्ज किया। फरियादीजो प्रॉपर्टी का व्यवसाय करते हैं, उन्होंने बताया कि गुरुवार को वे अपनी बेटी को लेने जा रहे थे। इसी दौरान कार शोरूम के पास आरोपी प्रेम प्रजापति ने अपनी गाड़ी अड़ककर उनका रास्ता रोक लिया। सौरभ का आरोप है कि प्रेम ने कहा कि अधिकारियों को दिए जा रहे आवेदन से कुछ नहीं होगा और विवाहित प्लॉट पर कब्जा वहीं लोग करेंगे। साथ ही 40 लाख रुपए देने और कुख्यात बदमाश किशोर हटकर उर्फ भाऊ से समझौता करने का दबाव बनाया। धमकी देने के बाद आरोपी वहां से फरार हो गया।

पहले भी मिल चुकी है धमकी- शिकायत में कहा गया है कि 9 फरवरी

को थाने में भी प्रेम ने पुराने हत्याकांड का हवाला देकर डराने की कोशिश की थी। इस संबंध में अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त को भी शिकायत की गई थी। प्रेम प्रजापति पर पूर्व में खुदेल में चाय दुकानदार की हत्या का आरोप लग चुका है। इस मामले में वह पांच साल जेल में रहा और बाद में सुप्रीम कोर्ट से बरी हो गया था। किशोर और प्रेम पर अन्य आपराधिक मामलों भी दर्ज हैं।

डेढ़ करोड़ के प्लॉट का विवाद- सौरभ के अनुसार उनका करीब डेढ़ करोड़ रुपए कीमत का प्लॉट है। पहले वहां मकान बनाकर किराए पर दिया गया था। 20 साल बाद मकान तोड़कर दोबारा निर्माण शुरू किया गया। इसी दौरान किशोर अपने साथियों के साथ मौके पर पहुंचा और कब्जा करने की कोशिश की। सौरभ ने उस समय सीसीटीवी फुटेज के आधार पर एफआईआर दर्ज कराई थी। आरोप है, बाद में राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र में ढाबे पर मारपीट के मामले में उन पर भी दबाव बनाते हुए समझौते के लिए केस दर्ज कराया गया था।

बेहतर ट्रैफिक के लिए अब ड्रोन से नजर वाहन अस्त-त्यस्त दिखे, बनाया चालान

रांग साइड वाहन चलाने, नो पार्किंग में गाड़ियां खड़ी करने वालों पर नजर

इंदौर। ट्रैफिक व्यवस्था में नंबर वन बनने यातायात विभाग लगातार बाजार क्षेत्र में भ्रमण कर रहा है। वाहन चालकों को पार्किंग में वाहन पार्क करने, नियमों का कड़ाई से पालन करने की सीख दी जा रही है। इसी क्रम में अब बेहतर ट्रैफिक के लिए सुबह से रात तक ड्रोन कैमरों से नजर रखी जा रही है। इस दौरान अस्त व्यस्त ढंग से खड़े वाहनों पर कार्रवाई होगी। पुलिस उपायुक्त (प्रभारी यातायात) राजेश त्रिपाठी के मार्गदर्शन में ट्रैफिक मॉनिटरिंग के लिए हर्डे-रेजोल्यूशन ड्रोन कैमरों का उपयोग किया जा रहा है। कंट्रोल रूम से अधिकारियों ने पलासिया, गीता भवन चौराहा, इंदरप्रस्थ चौराहा, इंडस्ट्री हाउस, आनंद बाजार, रीगल सहित अन्य प्रमुख स्थानों पर ड्रोन से निगरानी रखी।

मौके पर ही कार्रवाई

ड्रोन फुटेज के जरिए रांग साइड वाहन चलाने वालों, नो पार्किंग में गाड़ियां खड़ी करने वालों, लेफ्ट टर्न बाधित करने वालों और



ड्रोन पेट्रोलिंग से मिलेंगे ये लाभ

- नियम तोड़ने वालों पर प्रभावी और त्वरित कार्रवाई
- ट्रैफिक जाम की स्थिति में बेहतर नियंत्रण
- दुर्घटना होने पर तुरंत प्रतिक्रिया
- रात के समय भी बेहतर निगरानी

पुलिस कमिश्नर ने कहा कि तकनीक के माध्यम से शहरवासियों को सुरक्षित और सुविधाजनक सफर उपलब्ध कराना प्राथमिकता है।

अतिक्रमण करने वालों को चिह्नित कर उनके खिलाफ चालानी कार्रवाई की गई। इसके अलावा, यातायात में बाधा बन रहे ठेले और

अन्य अवरोधों को भी हटाया। दुकानों के बाहर जमा भीड़ को नियंत्रित किया, ताकि आम नागरिकों को सुगम आवागमन मिल सके।

गंदगी के बीच गुलाब जामुन बनाते मिलने पर फैक्ट्री को बंद कराया

1600 किलो गुलाब जामुन जब्त, 3 टीम ने छापा कार्रवाई की



मंटेरियल बिना पैलेटस के अक्वच्छ जतावरण में रखे जाएं, पेस्ट कंट्रोल का रिकॉर्ड नहीं पाया गया।

वैध अनुज्ञति नहीं मिली - मौके पर निर्माण

किये जा रहे खाद्य पदार्थ शाही गुलाब जामुन के 800 ग्राम पैक एवं 1500 ग्राम पैक के 2 नमूने लिए गए तथा 1600 किलो खाद्य सामग्री को जब्त किया

गया। खाद्य पदार्थों के निर्माण स्थल में गंदगी पाये जाने के कारण तथा निर्माण के लिए वैध अनुज्ञति न होने के कारण, आवश्यक सुधार होने तथा अन्य औपचारिकताएं पूर्ण होने तक प्रतिष्ठान में खाद्य कारोबार तत्काल प्रभाव से बंद कराया गया।

पिपलिया राव में भी कार्रवाई

दूसरे दल द्वारा पिपलिया राव इंदौर स्थित जय नमकीन प्रोपराइटर संजय गोयल से एक नमकीन का नमूना लिया। साफ सफाई के निर्देश दिए गए। तीसरे दल द्वारा रंजीत हनुमान मंदिर रोड पर स्थित राजकमल भोजनालय का औचक निरीक्षण किया गया। किचन एवं भंडारण कक्ष का निरीक्षण किया गया। जहाँ खाद्य सामग्री का रख-रखाव अव्यवस्थित पाया गया एवं दस्तावेजों की कमी पायी गयी। सुधार हेतु निर्देश दिया गया। साथ ही पनीर एवं आटा के 02 नमूने जांच के लिए लिए गए।

पुस्तक समीक्षा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
समीक्षक

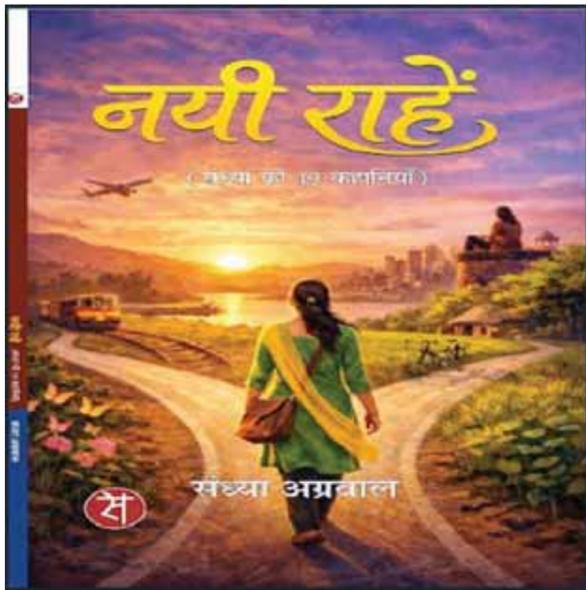
मकालीन हिंदी कथा-साहित्य में संघ्या अग्रवाल एक ऐसी संवेदनशील और सजग लेखिका के रूप में उभरती हैं, जिनकी लेखनी जीवन के सूक्ष्मतरंग अनुभवों को गहरी मानवीय अनुभूति के साथ शब्द देती है। उनका कहानी-संग्रह 'नयी राहें' केवल कथाओं का संकलन नहीं, बल्कि जीवन, समाज और मनुष्य के अंतर्मन से संवाद करने वाला एक सशक्त साहित्यिक दस्तावेज है। इन कहानियों में यथार्थ की कठोरता के साथ संवेदना की कोमलता और संघर्ष के बीच आशा की उजली रेखा स्पष्ट दिखाई देती है।

'नयी राहें' शीर्षक अपने आप में बहुअर्थी और प्रतीकात्मक है। यह केवल सामाजिक या भौतिक परिवर्तन का संकेत नहीं देता, बल्कि जीवन के भीतर जाग्रत होती नई चेतना, आत्मविश्वास और मानवीय मूल्यों की खोज का रूपक बन जाता है। संग्रह की कहानियाँ पाठक को केवल कथा-रस का अनुभव नहीं कराती, बल्कि उसे सोचने, ठहरने और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं। संघ्या अग्रवाल की लेखनी की विशेषता यह है कि वह उपदेशात्मकता से दूर रहते हुए भी अपने कथ्य को प्रभावशाली और स्मरणीय बना देती हैं। 'नयी राहें' पाठक को सोचने, महसूस करने और जीवन के नए अर्थ खोजने के लिए प्रेरित करती है।

इस संग्रह की कहानियाँ समाज के उन सूक्ष्म और अक्सर उपेक्षित पक्षों को सामने लाती हैं, जो सामान्य दृष्टि से ओझल रह जाते हैं। यहाँ स्त्री-मन की पीड़ा, संघर्ष और आत्मनिर्भरता की आकांक्षा के साथ-साथ उसकी जिजीविषा और आत्मसम्मान की चेतना भी उपस्थित है। पारिवारिक संबंधों की ऊष्मा, उनमें छिपी दरारें, पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी और बदलते सामाजिक

जीवन की तलाश में संध्या की 'नयी राहें'

'नयी राहें' शीर्षक अपने आप में बहुअर्थी और प्रतीकात्मक है। यह केवल सामाजिक या भौतिक परिवर्तन का संकेत नहीं देता, बल्कि जीवन के भीतर जाग्रत होती नई चेतना, आत्मविश्वास और मानवीय मूल्यों की खोज का रूपक बन जाता है। संग्रह की कहानियाँ पाठक को केवल कथा-रस का अनुभव नहीं कराती, बल्कि उसे सोचने, ठहरने और आत्ममंथन के लिए प्रेरित करती हैं। संघ्या अग्रवाल की लेखनी की विशेषता यह है कि वह उपदेशात्मकता से दूर रहते हुए भी अपने कथ्य को प्रभावशाली और स्मरणीय बना देती हैं। 'नयी राहें' पाठक को सोचने, महसूस करने और जीवन के नए अर्थ खोजने के लिए प्रेरित करती है।



मूल्य, ये सभी तत्व लेखिका की कथाओं में अत्यंत संवेदनशीलता और प्रामाणिकता के साथ उभरते हैं। यह संग्रह केवल स्त्री-विमर्श तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समूचे मानवीय

अनुभव को व्यापक दृष्टि से प्रस्तुत करता है। संघ्या अग्रवाल की भाषा इस संग्रह की प्रमुख शक्ति है। उनकी भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और साहित्यिक गरिमा से

युक्त है। वे शब्दों के माध्यम से जीवन के सूक्ष्म भावों को इस तरह पिरोती हैं कि पाठक अनायास ही कथा-प्रवाह में बहने लगता है। संवादों की स्वाभाविकता, भावों की गहराई और परिवेश का जीवंत चित्रण उनकी कहानियों को विश्वसनीय और प्रभावशाली बनाता है। उनके यहाँ परिवेश केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि कथा का सक्रिय घटक बन जाता है, जो पात्रों के मनोविज्ञान को और अधिक स्पष्ट करता है। इस संग्रह की कहानियाँ जीवन के संघर्षों से पलायन नहीं करती, बल्कि उनसे जूझने की प्रेरणा देती हैं। निराशा के बीच आशा, टूटन के बीच संबल और अंधेरे के बीच नई राहों की तलाश, यही इन कथाओं का मूल स्वर है। लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि जीवन एक संघर्ष नहीं होता; उसमें विरोधाभास, असफलताएँ और ठोकरें अनिवार्य हैं, परंतु इन्हीं अनुभवों के बीच मनुष्य अपने लिए नई दिशाएँ खोजता है। यही भाव 'नयी राहें' को केवल साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

यह पुस्तक पाठक की संवेदनशीलता को जाग्रत करता है। आत्मकेन्द्रित होते समय

में ऐसी कहानियाँ मनुष्य को दूसरों के दुःख-दर्द से जोड़ती हैं और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना करती हैं। युवा पाठकों के लिए ये कथाएँ जीवन की वास्तविकताओं से परिचय कराती हैं, जबकि परिपक्व पाठकों के लिए आत्मालोकन का अवसर प्रदान करती हैं। इस दृष्टि से 'नयी राहें' केवल पढ़ने का सुख नहीं देती, बल्कि सोचने और बदलने की प्रेरणा भी देती है। वास्तव में संघ्या अग्रवाल का यह कहानी-संग्रह हिंदी कथा-साहित्य में एक सार्थक और संवेदनशील उपस्थिति दर्ज कराता है। 'नयी राहें' जीवन के उन अनकहे पक्षों को स्वर देती है, जो अक्सर हमारे भीतर दबे रह जाते हैं। यह संग्रह पाठक को अपने भीतर झाँकने, अपने प्रश्नों से संवाद करने और अपनी-अपनी नई राहें खोजने का साहस प्रदान करता है। लेखिका को इस उत्कृष्ट कृति के लिए हार्दिक बधाई, निस्संदेह यह संग्रह पाठकों के मन में अपनी स्थायी जगह बनाएगा और समकालीन हिंदी साहित्य को नई ऊर्जा प्रदान करेगा।
पुस्तक-नयी राहें
लेखिका - संघ्या अग्रवाल
प्रकाशन - समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली
मूल्य-235 रुपये

कहानी

अमर चट्टा



कॉलेज में छुट्टियाँ लग गई थीं। मैं एक परिवारिक शादी में शरीक होने यूँ ही अपनी मासों के पास चली आई। मैं इस वक समुन्द्र में पानी के जहाज पर हूँ क्यों मुझे कुछ बातें देर से समझ आती हैं। अचानक उसका ख्याल क्यों कर आया। क्या कर रहा होगा वह इस वकत? कॉलेज पीछे छूट गया था पर आखिरी दिन याद आ गया। क्या चल रहा था यहाँ? क्लासरूम इतना गंदा कर रखा है?

डिसिप्लिन का मारा इसान थोड़ा रूखा सूखा हो जाता है। फिर जब उसके हिसाब से काम नहीं होता तो आफत किसी न किसी पर आ पड़ती है। उबासीयों लेती क्लास का सेंटर ऑफ अट्रैक्शन भी बदल जाता है और खिड़कियों से यह दृश्य देख रहे, ताकने-झांकने वालों की निगाहें और मुस्कुराहटें कितने दिनों तक फ्रेविकोल की तरह चिपकी रहती हैं। टेबल आँधे मुँह गिरने को पड़ा था। चॉक कुचल गई थी। अपने कड़क स्वभाव और अनुशासन के लिए अप्रिय पर्सनालिटी की गिनती में आते थे। सर क्लासरूम में आ चुके थे।

मैं सामने के बेंच पर बैठी थी। टेबल पर सैंडल के निशान दिख रहे थे। दस मिनट पहले ही क्लास में जब हम कुछ लड़कियाँ थीं पास किसी लाउडस्पीकर पर बज रहे गाने की धुन धिक्क रही थी। पहल मैंने ही की थी, इसलिए कुछ निगाहें और मेरे रूप की तरफ उठीं।

सर टेबल हिला कर देख रहे थे, जिसकी चूल्हे हिलने लगी थी। थैक गाँड में सही समय पर उतर गई। जिस दरख्त से यह टेबल बना होगा उसमें जीतू लज्ज रेखा



नहीं लिखा होगा। यदि ऐसा कुछ लिखा भी होगा तो कड़क बिजलियाँ न गिरी होंगी। तुफानी बारिशों में आधी तरफ से भीगा होगा। तपती धूप सीधी न पड़ी होगी। टेबल बन जाने पर कारीगर ने बारंबार मरम्मत के पैसे बनाने के लिए अपने मन की खोटा लिए छोटी कील फँसाई हो। वैसे खोटा बड़ी हो तो कील भी बड़ी होनी चाहिए थी। मैं मन ही मन सोच रही थी तभी सिर झुका कर मेरी दोस्त ने मुझसे कुछ कहना चाहा था। मैं अपने ही खयालों में थी। मेरे मुँह से बेसाखुता शब्द निकल पड़े। कच्चे प्यार की निशानी लेकर कट गया होगा। पिन ड्रॉप साइलेन्स के कारण वे शब्द खनक गये।

बात सबको सुनाई देकर ठहाकों में

बदल गई। आज के दिन की भड़ास के लिए यह समय और टॉपिक दोनों पर्याप्त थे।

कहाँ से पढ़ाई की है? यही सीख मिली है अब तक? इन झिड़कियों से बात शुरूआत होकर क्या खाक करोगे जिंदगी में- तक पहुँच रही थी।

आज तक किसी से डॉट नहीं सुनी कम से कम इस कॉलेज में तो नहीं।

कोई मुझ पर हँस रहा था। मैं भी और कनिष्ठियों से भी। कुछ पलों के लिए जैसे सारी निगाहें मुझ पर टिक गई। पहले वह हँसा फिर सब लोग हँसे और सबकी हँसी

पहले हवा में घुली फिर दीवारों के कान तक पहुँची आखिर मैं जमीन पर छत्र से गिरी। मेरे कानों तक शोर पहुँच रहा था। गाल अंगारे से दहकने लगे। मेरी आँखों में सामने

कुछ बातें

गज़ल

ख्वाबों में



कमलेश कुमार दीवान

ख्वाबों में ख्वालों से उड़े जा रहा हूँ मैं
इस उस हवा के साथ मुड़े जा रहा हूँ मैं।

बदल कभी बीच में गहरी झील से लगे
रूई से पहाड़ खुद ही चढ़े जा रहा हूँ मैं।



हद ए निगाह में ये कायनात आ गई
घनघोर अंधेरे ऐसे ही बड़े जा रहा हूँ मैं।

हेली कामेट घूमते ब्लेक होल में पहुँचा
घनघोर अंधेरा और जड़े जा रहा हूँ मैं।

गैस के गुबार धूल धुंध में भी है? 'दीवान'
जागा तो ख्वाब सर पे मढ़े जा रहा हूँ मैं।

हद ए निगाह-दृष्टि की सीमा, जहाँ तक दिखाई दे
हेली कामेट - पुच्छल तारा

बाल कहानी

प्रगति त्रिपाठी

मम्मा आपने कहा था ना कि आज हम बाहर खाना खाने जाएंगे? फिर आप अभी तक तैयार क्यों नहीं हुईं? तेजस ने अनमनाते हुए कहा।
हां बेटा! कहा तो था लेकिन देखो ना! कल ल्यूहार है और ये काम है कि सुरसा जैसे मुँह फेलाए हुए खड़ी है, खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही। अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ? सुबह से काम में लगी मम्मा ने कहा।

सुरसा जैसे मतलब? तेजस ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।
तुम सुरसा को नहीं जानते? नहीं, कौन है सुरसा?
सुरसा एक नाग माता थी। उसने राक्षसी

बनकर हनुमान जी की परीक्षा ली थी।

आप मुझे ये कहानी सुनाओ ना मम्मा? तेजस ने जिज्ञासावश कहा।

सुनो, जब रावण, सीता जी का हरण कर उन्हें लंका ले गया था तब वहाँ पहुँचने का एकमात्र रास्ता हिंद महासागर था। राम जी ने हनुमान जी को अपनी अंगुठी दी और लंका जाने का आदेश दिया। जैसे ही हनुमान जी उड़े वैसे ही समुद्र में भारी गर्जना हुई और नागों की माता सुरसा एक राक्षसी के रूप में प्रकट हुई और हनुमान जी का रास्ता रोककर बोली, देवताओं ने तुम्हें भोजन के लिए भेजा है, मैं तुम्हें खाऊंगी। हनुमान जी ने हाथ जोड़ते हुए कहा कि वो सीता माता को खोजने निकले हैं कृपया उन्हें जाने दे लेकिन सुरसा नहीं मानी।
फिर क्या हुआ मम्मा? तेजस की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी।
फिर... फिर सुरसा ने कहा कि उसे

सुरसा



बहमा जी से वरदान मिला है कि उसे लांघकर कोई नहीं जा सकता। उसने हनुमान जी को खाने के लिए विशाल मुँह खोल दिया। हनुमान जी ने भी अपना आकार बढ़ा दिया। सुरसा ने भी अपना आकार और बढ़ा दिया। तब हनुमान जी ने इस विपत्ति से

निपटने के लिए अपनी बुद्धि का सहारा लिया और हनुमान जी ने अति सूक्ष्म रूप धरकर सुरसा के मुँह के अंदर प्रवेश करके बाहर निकल गए और बोले माता मैंने आपकी आज्ञा का पालन कर दिया, अब आप मुझे जाने की अनुमति दे।

व्यंग्यिका

कैसा ये दौर

ए दस्तूर

अनुपमा अनुश्री

अपने लिए कोई
गाइडलाइन तय की नहीं !
कोई आदर्श फॉलो किया नहीं
जीवन मूल्यों को न समझा
न अपनाया
शिक्षक , उपदेशक बन गए !!
कोई संघर्ष शामिल हुआ नहीं
जीवन को अनुभव किया नहीं !
बस एक ही चीज सीख ली
पैसा कमाने की दौड़,
दिखावा , आडंबर, बनावट ,
होड़, नकलीपन,
बकबक और शोर !



देख- देख के ये दौर ,
हो जाते हैं बोझिल और बोर
बिना अनुभव, यह कैसी बकबक !
बिना तपे, ये कैसा सोना !
बिना सत्य, ये कैसी चमक !
बिना तराशे, यह कैसा कोहिनूर !
बिना मेहनत, कैसा धन !
बिना परहित, ये कैसा जीवन !
बोलचाल में मर्यादा, विनम्रता ,सभ्यता बिना
यह कैसी समझाइश !
दूसरों से अच्छे व्यवहार की
फिर कैसी फरमाइश !
बिना श्रेष्ठ विचार, संस्कार ,
अच्छे कर्म और व्यवहार
ये कैसी स्टाइल !!
वेईमानी, झूठ , फैशन,
फरेब है करीब
अपनों और अच्छे गुणों
से हैं गरीब !
यह कैसी लहर है !
भटकाव , बिखराव में
डूबा अपना ही घर है !
फेक जीवन को कहीं फेंक दो !
असलियत अपनाकर
खरा सोना बनो।
झूठी बातों में व्यर्थ न इतराओ
ब्रम्हांड में सच्चाई, ईमानदारी ,
प्रेम ,परोपकार की
वाइब फैलाओ।
भारत के इतने समृद्ध ज्ञान,
संस्कृति,भाषा, मर्यादा को
तोड़-मरोड़ कर
झूठी स्टाइल और
धुर्रें में मत उड़ाओ
अभी भी वक है सुधर जाओ।
जीवन को सही दिशा देने के लिए,
हमारे समृद्ध शास्त्र
और वांमय पद्य
सद्ज्ञान रूपी मोती चुनो
हर किसी की बातों , प्रवचन,
झूठ उपचार,दिखावे में पडकर
धोखा मत खाओ।
कि कर्मों की गति बड़ी है।
नीयत सही हो तो
नियति भी साथ देती है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए
उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16,
अल्फा इंडस्ट्रियल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-
453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी,
बाँबे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोक्लि
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवालों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subhasaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं।
इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं है।

सुरसा हनुमान जी की बुद्धि और शक्ति
देखकर बोली मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी।
तुम सफल हुए। मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूँ
कि तुम अपने कार्य में सफल होंगे। हनुमान
जी उनको प्रणाम करके आकाश में उड़ गए।
वाह! हनुमान जी बहुत शक्तिशाली थे।
तेजस ने कहा

और बुद्धिमान भी मम्मा तेजस के सर
पर हाथ फेरते हुए बोली।

अब ये बताओ कि इस कहानी से तुम्हें
क्या सीख मिली?

हम अपनी बुद्धि का प्रयोग करके बड़ी
से बड़ी विपत्ति का सामना कर सकते हैं।
बहुत बढ़िया। उसके बाद लोग बड़े या
अंतहीन काम को सुरसा की मुँह के जैसे की
उपमा देने लगे और रोजमर्रा की जिंदगी में
इसका प्रयोग करने लगे। समझें?

हां मम्मा समझ गया।
सुरसा की कहानी बताते हुए मम्मा ने घर
में ही तेजस का फेवरेट वेजिटेबल पुलाव
बना दिया। तेजस बहुत खुश हो गया।
इस तरह तेजस को रामायण के इस
प्रसंग के साथ एक नई जानकारी मिल गई।

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक



मास्कर के प्रकाश का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ने लगा था, अंधकार घने से छूटकर सूक्ष्मतरंग अवस्था तक पहुँचने को था। इस बढ़ने घटने के बीच सबसे बढ़िया जो घट रहा था वो था प्राकृतिक मनोहरता में निरंतर विकास का क्रम। कल-कल करती हवाएँ शांत पड़ी नदी के जल को जब हल्ले से स्पर्श करतीं तो मानों उनमें भी चुहलता भर जाती थी और इजलाते और लजाते हुए एक ओर को सिकुड़ जाती थीं फलतः-जल में एक आकृति उतर जाने सा आभास होता और यही प्रक्रिया जब बार-बार होने लगती तो निरंतरता से सुंदरता में चार चाँद लग जाता। पेड़ पौधे जो नदी के किनारे तने खड़े थे जल के धारा में नाचते से जान पड़ने लगते थे। डोल रहे हों जैसे। नदी में नावों की चहलकदमियाँ भी लोगों को आकर्षित करने हेतु काफी थीं। उन्हीं नावों में एक नाव ऐसी थी भी जिसके भीतर रंगों के छोटे-छोटे डिब्बे, इंजल, बोर्ड और बड़े-छोटे ब्रशों का झुंड था, जहाँ से नजर रखी जा रही होती थीं इन पल-पल बदलते प्रकाश और छाया के बारीक परिस्थितियों पर, जहाँ आए दिन सुंदर-सुंदर कृतियों का सृजन हो रहा होता था और जिसका नाम दिया गया था ले बोटिन?। जो हँ ये था चलता-फिरता स्टूडियो, नाव स्टूडियो। कलाकार शार्ल दोबिन्ची का पूरा रचना संसार बसता था इस नाव में।

कलाकार दोबिन्ची को भी बार्बिजां के रूसो की तरह - प्रकृति का सानिध्य खूब भाता था और वो अपने विधा में, किसी न किसी रूप में प्रकृति का प्रयोग करते भी थे, प्रकृति की अनुकृति करते थे। कला भी हमेशा से प्रकृति के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है हॉ कभी-कभी कुछ विशेष वाद के कारण कुछ कलाकार प्रकृति से दूर, कुछ इतर करने का प्रयास भी करते हैं, पर जिस प्रकार बिना भोजन जीवन मुश्किल है ठीक वैसे ही प्रकृति बिना कई काम मुश्किल है। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। प्रत्यक्ष न सही अमूर्त या आधुनिक रूप में ही सही पर प्रकृति का होना अनिवार्य सा है लगभग हर कृतियों में। ऐसा कोई भी मूल नहीं है जिसका प्रयोग कृतियों में किया जाय और वो प्रकृति में ना हो। कुछ कलाकार तो ऐसे भी हुए जो प्रकृति को मानवीय भावनाओं की भाँति गहराई तक उतर कर नाजुक और संवेदनशील अवस्था में उनका अंकन करते हैं, निर्जीव में भी सजीवता, जीवदत्ता प्रदर्शित होने लगती है और ऐसे ही कृतियों को देखकर

चलती-फिरती नाव और शार्ल दोबिन्ची की कला

प्रकृति का सानिध्य खूब भाता था और वो अपने विधा में, किसी न किसी रूप में प्रकृति का प्रयोग करते भी थे, प्रकृति की अनुकृति करते थे। कला भी हमेशा से प्रकृति के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है हॉ कभी-कभी कुछ विशेष वाद के कारण कुछ कलाकार प्रकृति से दूर, कुछ इतर करने का प्रयास भी करते हैं, पर जिस प्रकार बिना भोजन जीवन मुश्किल है ठीक वैसे ही प्रकृति बिना कई काम मुश्किल है। कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। प्रत्यक्ष न सही अमूर्त या आधुनिक रूप में ही सही पर प्रकृति का होना अनिवार्य सा है लगभग हर कृतियों में। ऐसा कोई भी मूल नहीं है जिसका प्रयोग कृतियों में किया जाय और वो प्रकृति में ना हो। कुछ कलाकार तो ऐसे भी हुए जो प्रकृति को मानवीय भावनाओं की भाँति गहराई तक उतर कर नाजुक और संवेदनशील अवस्था में उनका अंकन करते हैं, निर्जीव में भी सजीवता, जीवदत्ता प्रदर्शित होने लगती है और ऐसे ही कृतियों को देखकर दर्शक भावविभोर हुए बिना नहीं रह सकते।

दर्शक भावविभोर हुए बिना नहीं रह सकते। कलाकार शार्ल दोबिन्ची ऐसे ही कलाकारों में थे जो नाव पर यात्रा करके कृतियों का निर्माण किया करते थे, जिन्हें जंगलों से ज्यादा नदियों के किनारों ने आकर्षित किया, जिनके कृतियों में खेत झोपड़ियाँ गाँवें, बत्ख, हरे-

में सफल रहे, इनका जन्म पेरिस में 15 फरवरी, 1817 में हुआ था। पिता, चाचा और चाची के कलाकार होने का असर इनके कलाकार जीवन पर भी पड़ा। शुरुआती कला यात्रा पारंपरिक शैली में रही पर जल्दी ही बाहर की यात्रा और बार्बिजाँ में बसने के चलते उनके कला में

भी काफी प्रसिद्ध हुए। आप इस बीच भी लगातार सक्रिय रहे। बाद में आप की कृतियों कई वर्षों तक निरंतर सैलून में प्रदर्शित हुईं। फ्रांसीसी सरकार द्वारा लीजन ऑफ ऑनर के अधिकारी के रूप में भी आपको नामित किया गया था। कलाकार थियोडोर रूसो, जूल्स डुप्रे, क्लोद मोने,

पर बैठकर ये कृतियाँ बनाते थे बहुत ही स्ट्रोकफुल बन पड़ा है। नाव के और भी कई चित्र बड़े ही सुन्दर हैं। दोबिन्ची के कृतियों में शांत नदियों और शांत जल के दृश्य हैं। कोमल, वास्तविक, आँखों को सुकून देने वाला प्रकाश है। खुला और विस्तृत फैलाव के साथ आकाश है। सहज, संतुलित पर जबरदस्त स्ट्रोक है तो लय के मानिंद भी धनी कृतियाँ हैं दोबिन्ची की। नाव पर सवार होकर यात्रा करने का प्रतिफल यह रहा कि इनके कला में प्रकाश और क्षणिक वातावरण को पकड़ने की एक नई शैली विकसित हो गई थी, जो आगे चलकर प्रभाववादी चित्रकारों की भी विशेषता बनी। कलाकार दोबिन्ची बहुत ही सरल, विनम्र और प्रकृति-प्रेमी थे। शहर की चकाचौंध, दूषित, माहौल से दूर, उन्हें नदी और खेतों के बीच, शांत बिल्कुल शांत वातावरण में रहना अधिक प्रिय था।

1866 तथा 67 में सैलून जूरी के सदस्य के रूप में दोबिन्ची युवाओं को आगे लाने हेतु सक्रिय भूमिका में रहे। कुछ समय तक इंग्लैंड के दौर पर रहे दोबिन्ची 1870 में वहाँ चल रहे एक युद्ध के कारण वापस लौट आये। कैमिल कोरो से मित्रवत व्यवहार के साथ ही कलाशिक्षा की बात भी सामने आती है।

इनके कृतियों में चमकदार रोशनी से नहाई सुबह है और उसी सुबह में रंगों से भोगे नदी में नहाते बत्ख हैं, दोपहर की तपिश है, अलसाई अवस्था में शाम है, फैलाता, छितराता आसमान है जो अपने में समेट लेना चाहता है पूरा सूर्य। सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच का बदलता सुनहरा रंग है जहाँ चमक और सुप्त का अंतर स्पष्ट है, जहाँ प्रकृति को महसूसते हुए अंकित करने का प्रयास है, जहाँ प्रकृति के हर रंग को देखा जा सकता है, महसूस किया जा सकता है। द फार्म, कैनवास पर तैल, स्टूडियो आन द बोट, एचिंग, पुल विश्व डीवर, एचिंग जैसी कृतियों के कलाकार, प्रकृति के संवेदनशील कलाकार दोबिन्ची 21 फरवरी 1878 को सदा के लिए इस देह को त्याग चले।



भरे जंगल और इस परिवेश में अपने कार्य में लीन लोग हैं।

बार्बिजाँ गाँव जो फॉर्तिनब्लो वन के सीमा पर बसा हुआ था, कुछ कलाकारों को वहाँ का दृश्य इतना पसंद आया कि वहाँ के होकर रह गये और चित्रकारों में रहे। दोबिन्ची भी ऐसे ही कलाकारों में से थे।

चित्रकारी परिवेश में पले बड़े कलाकार शार्ल दोबिन्ची बार्बिजाँ कलाकारों में सबसे अधिक प्रसिद्ध प्राप्त करने

परिवर्तन देखने को मिला और वे प्रकृति के दुलारे एवं संवेदनशील कलाकार बन गये।

पेरिस के परिदृश्य पर लगातार काम करते रहने वाले कलाकार दोबिन्ची कई बार अपने चित्रों को सैलून में प्रदर्शित कर पाने में असफल रहे पर प्रकृति और बार्बिजाँ को लेकर उनके मन में प्रेम कम नहीं हुआ हालाँकि परिवार चलाने हेतु एचिंग, वुडकटिंग, प्रिंटमेकिंग, लिथोग्राफी भी करनी पड़ी, बाद में इन माध्यमों के काम

पॉल सेजान, पॉल देलारोस और ग्युस्ताव कुबें जैसों से परिचित होने के बाद आपके कृतियों में समय-समय पर और भी परिवर्तन देखने को मिले। जिनेवा में भी आपके स्केचिंग की बात है। स्टूडियो के जैसे बनायी गयी नाव बार्ज ले बोटिन खरीदने के बाद आप उसमें यात्रा के दौरान भी कृतियों के सृजन में लगे रहे फलतः सैन, ओइस नदी और उनके किनारे के स्थान आपके पसंदीदा कला स्थान बन गये, पेंसिल से बना चित्र द बोटिन जिस

वेब सीरिज समीक्षा

आदित्य दुबे



लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

विश्व की मशहूर किताब - ' भेंडी बाजार ' से अनुप्रेरित वेबसीरिज - 'दलदल' यूँ तो एक क्राइम थ्रिलर है मगर अपराध अन्वेषण करती पुलिस अधिकारी इस सीरिज में दो अलग-अलग स्तर पर संघर्षत दिखाई गई है। एक ओर अपराधी को पकड़ने का संघर्ष है तो दूसरी ओर उसका अपने अतीत का भी मन ही मन चल रहा संघर्ष भी है 'भेंडी बाजार' मुम्बई का वह इलाका है जहाँ सँकरी गलियों में लबालब अपराध मौजूद है। शहर के इसी इलाके में एक सीरियल किलर घूम रहा है जो मर्दों को अपना निशाना बना रहा है। पुलिस परेशान है, पब्लिक हेरान है और इसी बीच एक चरित्र विकसित होता है डिप्टी सुपरिटेण्डेंट पुलिस, रिता फरेरा का। सिरीज की इस केन्द्रीय भूमिका को निभाया है प्रतिभाशाली अभिनेत्री भूमि पेडनेकर ने। और जैसा कि हमने पहले कहा था कि पटकथा के मुताबिक रिता सिर्फ मुजरिमों से ही नहीं लड़ रही, जो लड़ रही है अपने उस अतीत से भी जो उसे चैन से सोने नहीं दे रहा है। यही संघर्ष की दुविधा दर्शकों में उत्सुकता जगाती है। अस्त-व्यस्त पटकथा और कहन की कमजोरी से

भूमि पेडनेकर ने 'दलदल' की में किया कमाल

यह एक एक ऐसी सीरीज बन गई है जो एपीसोड दर एपीसोड अपने ही बनाए दलदल में धँस जाती है। इसका ट्रेलर देखकर जहाँ यह महसूस हुआ था कि इसमें जबरदस्त रहस्य होगा, वहीं इसमें भावनाओं का तड़का ही कुछ ज्यादा दिखता है। सिरीज की कहानी तीन हिस्सों में बँटी है। पहले हिस्से में बाल तस्करि पर है, दूसरे हिस्से में सीरियल किलिंग की तथाकथा है और अंतिम और तीसरे हिस्से में ट्रीमा से गुजर रहे लोगों की कहानी बयानों की गई है। दर्शक इसी हिस्सों में बँटी कहानी में तारतम्यता तलाशते रहते हैं और सिरीज थम जाती है। सिरीज की रपतार थोड़ी धीमी है, लेकिन ये इसकी कमजोरी नहीं, ताकत है। यह सिरीज आपको वर्णित चरित्रों के साथ तादात्म्य बैठाने का और उनकी तकलीफ को महसूस करने का पूरा वक्त देती है। सात एपिसोड की इस पूरी सिरीज में कई कहानियों का ऐसा



'दलदल' है जिसमें से आपको कोई भी कहानी पूरी तरह समझ में नहीं आती है उल्टा एक समय बाद आप खोज जाते हैं। किसी भी सिरीज की कमजोर कहानी का खामियाजा

उसमें काम करने वाले कलाकारों को भुगतना पड़ता है मगर कलाकार में दम हो तो वो अपने तई काफी कुछ ठीक-ठाक कर देते हैं। इस सिरीज में भी रिता की केन्द्रीय भूमिका में भूमि पेडनेकर ने यही कमाल दिखाया है। सिरीज में भूमि का किरदार चुप रहने वाला है। उसके अन्दर एक दर्द है और भूमि ने इसे बड़े ही अच्छे से निभाया। उनका ऐसा चरित्र निभाने के लिए हामी भर देना ही बड़ी बात है। हालाँकि, एक समय के बाद लगता है कि वो पूरी सिरीज में एक जैसी ही दिख रही हैं और यह उनकी मजबूरी थी क्योंकि उनका चरित्र लिखा ही वैसा गया था। दीपक तिजोरी की बेटी समारा, कुछ सीन में

बेहतर हैं पर बाकी जगह ओवरड्रामेटिक हैं। परेश रावल के बेटे आदित्य रावल पूरी सिरीज में नशे में ही रहते हैं। उन्हें देखकर हमें भी कुछ फील ही नहीं होता।

चिन्मय का चरित्र इस सिरीज में आपको चिढ़ाने के लिए है और यह काम वो बखूबी करते हैं। भूमि की साथी इन्दू म्हात्रे के रूप में गीता अग्रवाल का काम बढ़िया है। बाकी कलाकारों में अनंत महादेवन, राहुल भट्ट, सोरभ गोयल और विजय कृष्णा कुछ कुछ देर के लिए हैं और काम सबका ठीक ही है।

सिरीज के निर्देशक अमृतराज गुप्ता ने कहानी को बड़ी इमानदारी से फिल्माया है। यहाँ रहस्य केवल यह नहीं सुलझाया है कि है कि - 'कातिल कौन है' बल्कि यह भी बताया है कि 'कोई कातिल क्यों बना?' अमृत राज गुप्ता ने सुरेश त्रिवेणी के साथ मिलकर एक ऐसी दुनिया रची है जो यथार्थ के काफी करीब की लगती है। फिल्म का लेखन पक्ष श्रीकान्त, अर्जुनधरन, रोहन डिग्गा और प्रिया सग्गी के जिम्मे था जिसका ठीक-ठीक निर्वाह हुआ है। संवाद में इस्मैल हेदरी की विशेषज्ञता साफ दिखती है, क्योंकि बातें कम हैं, लेकिन जो हैं, वो सीधा दिल पर लगती हैं। सिरीज के छायांकन की भी तारीफ करनी होगी। मुम्बई को अक्सर पद पर बहुत 'स्लेमर्स' दिखाया जाता है, लेकिन यहाँ मुम्बई एक चरित्र की तरह है, थकी हुई, बौझिल और रहस्यों से भरी। कैमरा एंगल्स ऐसे रखे गए हैं कि दर्शक को हर पल एक किस्म की बेचैनी महसूस होती रहे, जो एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर की कामयाबी की निशानी है।

मातृभाषा

डॉ. ललित कुमार



लेखक इन्वॉटिस विश्वविद्यालय बरेली में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष हैं।

मातृभाषा की ताकत का एहसास मुझे तब समझ में आया, जब मैं विश्व भरती शांतिनिकेतन में पीएचडी करने के लिए गया था। मैं दिल्ली एनसीआर मेरठ शहर में जहाँ पला पड़ा। वहाँ की खड़ी बोली में हरियाणवी और पंजाबी भाषा का मिक्स संवाद देखने को मिलता है। वह संवाद ऐसा तीखा होता है, जो किसी भी बाहरी व्यक्ति को बुरा लग सकता है, क्योंकि वेस्ट यूपी के मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत, शामली और सहारनपुर के इन जिलों में ज्यादातर हरियाणवी और पंजाबी भाषा का मिक्स संवाद यानी एक मिला-जुला असर देखा जाता है। मातृभाषा का फैला यह मकड़ जाल हमारे दिलों दिमाग पर इस कदर हावी है कि हम चाह कर अगर किसी भी बोली को अपना ले, लेकिन मातृभाषा का आकर्षण हमें कहीं न कहीं जरूर प्रभावित करता है, जो हमें अपनेपन का एहसास करकर एक दूसरे के करीब लाता है।

मेरठ शहर से बाहर जब मैं उच्च शिक्षा के लिए मध्यप्रदेश (भोपाल), महाराष्ट्र (वर्धा), सिलचर (असम) और पश्चिमी बंगाल (बोलपुर, शांतिनिकेतन) पढाई करने गया। तो वहाँ की मातृभाषाओं से सीधा सामना हुआ। एक बार को तो ऐसा लगता था कि मैं कैसे अपने आप को संभाल पाऊँगा। भारत जैसा विशाल देश कैसे अपने आपमें इतनी विविधताएँ समेटे हुए कि महाराष्ट्र असम और बंगाल के साथ अन्य राज्यों में हिंदी को सिर्फ संचार का एक बेहतर माध्यम माना जाता है। लेकिन जब भी कोई व्यक्ति आपस में संवाद करता है, तो उनकी मातृभाषा उन्हें एक दूसरे करीब ला देती है। ऐसा मैं इसलिए बता रहा हूँ कि मैंने खुद कई बार ऐसी घटनाओं का सामना किया है। खासकर बंगाल में मातृभाषा के प्रति जो यम और इज्जत देखने को मिलती है वैसी बहुत ही कम जगह देखने को मिलती है। विश्व भरती शांतिनिकेतन में जब भी मैं अपने किसी प्रशासन काम के लिए जाता था। वहाँ आड़े मातृभाषा आ

मातृभाषा की ताकत को विश्व भरती शांतिनिकेतन में समझा

मेरठ शहर से बाहर जब मैं उच्च शिक्षा के लिए मध्यप्रदेश (भोपाल), महाराष्ट्र (वर्धा), सिलचर (असम) और पश्चिमी बंगाल (बोलपुर, शांतिनिकेतन) पढाई करने गया। तो वहाँ की मातृभाषाओं से सीधा सामना हुआ। एक बार को तो ऐसा लगता था कि मैं कैसे अपने आप को संभाल पाऊँगा। भारत जैसा विशाल देश कैसे अपने आपमें इतनी विविधताएँ समेटे हुए कि महाराष्ट्र असम और बंगाल के साथ अन्य राज्यों में हिंदी को सिर्फ संचार का एक बेहतर माध्यम माना जाता है। लेकिन जब भी कोई व्यक्ति आपस में संवाद करता है, तो उनकी मातृभाषा उन्हें एक दूसरे करीब ला देती है। ऐसा मैं इसलिए बता रहा हूँ कि मैंने खुद कई बार ऐसी घटनाओं का सामना किया है। खासकर बंगाल में मातृभाषा के प्रति जो प्यार और इज्जत देखने को मिलती है वैसी बहुत ही कम जगह देखने को मिलती है।

जाती थी। एक बार का वाक्य मुझे याद है, जब मैं पीएचडी की वार्षिक फीस जमा कर रहा था। वहाँ बैठ कर्मचारी मुझेसे बंगला में और मैं हिंदी में यानी हम दोनों अपनी मातृभाषा में एक दूसरे से लगातार संवाद करते रहे। यानी दोनों के संवाद हिंदी और बंगाल भाषा में होते रहे। अंत में कर्मचारी बोला आमी हिंदी जानी न, अपना बांग्ला ते बोलो, मैंने कहा मुझे बांग्ला नहीं आती। उसने फिर कहा तुमि के बोलेछे आमी जानी न, यानी मुझे नहीं पता आप क्या बोल रहे है। तब मुझे समझ में आ गया कि मातृभाषा व्यक्ति की समाजिक-संस्कृति की एक ऐसी धरोहर है, जिससे उसकी पहचान होती है।

विश्व भरती शांतिनिकेतन देश का एक पहला ऐसा केंद्रीय विश्वविद्यालय है, जहाँ करीब 21 भाषाओं के विभाग खुले हैं और देश दुनिया की अलग-अलग भाषाओं में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और पीएचडी डिग्री जैसे कोर्स चलते हैं। देश के किसी संस्थान में इतनी भाषाओं में पढाई नहीं होती। कारण विश्व भरती शांतिनिकेतन अपने आपमें मातृभाषा के उद्देश्य को संरक्षण और बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भाषा की विविधता के प्रति जागरूकता फैलाना में काम कर रहा है।

मातृभाषा की नींव ही बांग्लादेश (पूर्व पाकिस्तान) भाषा आंदोलन से जुड़ी है। वर्ष 1992 में 21 फरवरी को बांग्ला भाषा को आधिकारिक मान्यता दिलाने के लिए छात्रों ने संघर्ष कर रहे थे। और बाद में पुलिस ने उन पर गोली चला दी। जिसमें कई छात्रों की मृत्यु हो गई। छात्रों



के शहादत की याद में 21 फरवरी को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया गया। वहीं यूनेस्को ने 1999 में 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मान्यता दी, और वर्ष 2000 में पहली बार इसे वैश्विक स्तर पर मनाया गया।

दुनिया में लगभग 8,324 भाषाएँ बोली जाती हैं। जिनमें से 7000 भाषण प्रचलन में है। इनमें बहुत सी भाषाएँ खस होने के कारण पर पहुंच चुकी हैं। यानी भाषाओं के संरक्षण की दिशा में देश ही नहीं दुनिया के कई देश इस पर काम कर रहे हैं। भाषा हमारी पहचान, संचार

और जरिए समाज को एक सूत्र में पिरोने, शिक्षा और विकास के लिए जरूरी हो जाती है। भाषा केवल रोजगार तक की सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह समावेशी विकास में एक अहम भूमिका अदा करती है। वैश्वीकरण की प्रतिस्पर्धा में मातृभाषा पर मंडराता खतरा आने वाली पीढ़ी को मुसीबत में डाल सकता है, क्योंकि नई पीढ़ियाँ को जैसे सिखाया और बताया जाएगा। वह इस पर चलकर उसको आत्मसात करेंगे। इसलिए अपनी मातृभाषा का संरक्षण करके नई पीढ़ियों में ऐसे संस्कार डाले जाए, ताकि वह उन्हें संभालकर रख सके। हमें यह भी याद रखना होगा कि जब भी भाषाओं की चमक फकी पड़ेगी, तो दुनिया की सांस्कृतिक विविधता भी खतरे में पड़ सकती है। दुनिया में कम से कम सात हजार भाषाओं में 45 फ्रीडो भाषाएँ लुप्तप्राय हैं। यानी अकेले भारत में लगभग 19,500 से अधिक भाषा या बोलियाँ बोली जाती हैं, लेकिन इनमें से केवल 100 भाषाओं का इस्तेमाल शिक्षा के क्षेत्र में होता है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट यह भी बताती है कि 21वीं सदी में लगभग 3000 भाषाएँ विलुप्त हो जाएंगी। एक अनुमान यह भी लगाया जा रहा है कि 22वीं सदी तक मात्र सौ भाषाएँ ही शेष रह जाएंगी। दुनिया में जिस गति से भाषाएँ विलुप्त हो रही हैं, आने वाले भविष्य में उनके

अस्तित्व भी समाप्त हो सकता है, लेकिन जो भाषा खतरे में आ रही है। उनके साथ उनकी संस्कृति भी समाप्त हो जाएगी। अकेले मैक्सिको में 68 भाषाओं में से 64 भाषाएँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। पेरू में लगभग 50 भाषाओं पर गंभीर खतरा बढ़ता जा रहा है। अफ्रीका की 350 से ज्यादा भाषाओं पर भी खतरा मंडरा रहा है। ऑस्ट्रेलिया में 100 से ज्यादा भाषाएँ शामिल हैं, जिन पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। वहीं तुर्की, ईरान और इराक में बोली जाने वाली कुर्द भाषा को लुप्तप्राय माना जा रहा है। कुर्द भाषा एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसे दो करोड़ से ज्यादा लोग बोलते हैं। लेकिन कहीं भी इसे आधिकारिक भाषा का दर्जा नहीं मिला है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका असर न के बराबर है। यूरोप में 200 भाषाओं में से कई भाषाएँ लुप्तप्राय हैं। इनमें वेल्श, ब्रेटन और आइरिश जैसी सेल्टिक भाषाएँ शामिल हैं, हालाँकि आयरिश (गैलिक) आयरलैंड में इंग्लिश के साथ बोली जाती है।

भाषाई विविधता और बहुभाषावाद के लाभों को नियमित रूप से उजागर करना बेहद जरूरी है। दैनिक जीवन में हम जितनी अधिक भाषाएँ सीखते, जानते और समझते हैं। हमारे ज्ञान का कौशल उतना ही बेहतर होता है, जो हमें कहीं भी जीवन में सहायता प्रदान करने में मदद करता है, और हम सांस्कृतिक रूप से विश्व के अन्य क्षेत्रों में उतने ही करीब जाते हैं। इसीलिए विश्व भर में भाषाई समुदायों का समर्थन करना और एक-दूसरे के ज्ञान को साझा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रक्तदाताओं का सम्मान करना गर्व की बात-खंडेलवाल

रक्त सेवा शौर्य सम्मान समारोह में रक्तदान समितियों का हुआ सम्मान

बैतूल। यह बोलने का नहीं बल्कि सम्मान करने का दिन है। कई प्रकार के दान होते हैं इनमें सबसे बड़ा दान रक्तदान होता है। क्योंकि रक्तदान सीधे किसी व्यक्ति के जीवन को बचाने से होता है आज हमें गर्व है कि ऐसे सेवा भाव से प्रेरित रक्तदाताओं का सम्मान करने का अवसर मिला है। ये वो लोग हैं जो बिना किसी स्वार्थ के केवल मानवता के नाते आगे आकर अपना रक्तदान करते हैं और किसी अज्ञान व्यक्ति के जीवन की डोर को मजबूत करते हैं। उक्त आशय के विचार आज जिला अस्पताल परिसर में शासकीय रक्तकोष बैतूल, स्वास्थ्य विभाग बैतूल के द्वारा आयोजित रक्त सेवा शौर्य सम्मान समारोह एवं रक्तदाता प्रेरणा प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने व्यक्त किए।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके पश्चात केंद्रीय राज्यमंत्री डीडी उदके ने अपने संबोधन में कहा कि आज हमें उन लोगों का सम्मान करने का अवसर मिला है जो दूसरों के प्राणों की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। यह एक कार्यक्रम नहीं बल्कि मानवता के प्रति सम्पूर्ण का उत्सव है। रक्तदान वास्तव में एक जीवनदान महायज्ञ है। एसबीटीसी डिप्टी डायरेक्टर एनरचएम डॉ.रूबी खान ने अपने संबोधन में कहा कि पूरे प्रदेश में रक्तदाता मरीजों की जान बचा रहे है। आपके कार्य की जितनी सराहना की जाए कम है बैतूल में रक्तदाता बड़े उत्साह के साथ रक्तदान करते हैं, यही कारण की यहां लगातार रक्तदाताओं की संख्या बढ़ती जा रही है। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर सीएमएचओ डॉ. मनोज हुरमाड़े ने स्वागत उद्बोधन में सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रक्त कोष अधिकारी डॉ. अंकिता सोते ने अपने उद्बोधन में बताया कि जिन समितियों का आज यहां सम्मान हो रहा है उनके द्वारा एक साल में लगभग 90 रक्तदान शिविर आयोजित कराए गए हैं। इनके द्वारा किए गए रक्तदान के कारण ही सिकल सेल और थैलेसीमिया के मरीजों को बिना रिप्लेसमेंट के रक्त उपलब्ध कराया जाता है। उन्होंने बताया कि 90 रक्तदान शिविर में 7239 युक्ति रक्त एकत्रित किया गया है (जिले में 890 सिकल सेल रोगियों को रक्त दिया गया है। 455 थैलेसीमिया मरीज और 985 गर्भवती माताओं को निःशुल्क रिप्लेसमेंट फ्री बल्ड उपलब्ध कराया गया।

प्रकृति वात्सल्य गौशाला की चरनोई भूमि पर उद्योग विभाग ने की तार फैसिंग, गौसेवकों में आक्रोश

विश्व हिन्दू परिषद गौसेवा क्षेत्र प्रमुख सोहन विश्वकर्मा ने उद्योग विभाग को दी चेतावनी

धार। धार शहर और जिले में बीमार, बेसहारा गौवंश और बेजुबान प्राणियों के लिए प्रकृति वात्सल्य गौशाला, 34 वी बटालियन धार संवेदनशीलता के साथ कार्य कर रही है। करीब 300 गौवंश से परिपूर्ण यह गौशाला आज धार जिले में ही नहीं वरन् प्रदेशभर में अपनी पहचान रखती है। प्रकृति वात्सल्य गौशाला की चरनोई भूमि पर उद्योग विभाग ने अतिक्रमण कर तार फैसिंग कर देने से गौसेवकों में खासा आक्रोश व्याप्त हो गया है। विश्व हिन्दू परिषद गौसेवा क्षेत्र प्रमुख सोहन विश्वकर्मा ने उद्योग विभाग, धार जिला प्रशासन को चेतावनी देते हुए कहा कि जल्द ही उद्योग विभाग धार तार फैसिंग कर अतिक्रमण की गई जमीन प्रकृति वात्सल्य गौशाला को वापस दे नहीं तो वह स्वयं और विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता कलेक्टर कार्यालय में धरने पर बैठ जाएंगे।

उद्योग विभाग ने रखा सब को अंधेरे में- प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार की गौवंश की चरनोई भूमि पर उद्योग विभाग ने सब को अंधेरे में रखा। उक्त भूमि पशुपालन विभाग की है विभाग से भी किसी भी तरह की अनापत्ति उद्योग विभाग ने नहीं ली है।



ग्राम पंचायत जेतपुरा से उद्योग विभाग ने विकास के परमिशन नहीं ली और ना ही प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से कोई एनओसी नहीं ली है। ऐसे में यह मामला गर्मा गया है। उक्त चरनोई भूमि टोपनसी में इसका भूमि उपयोग उद्योग के लिए नहीं है। यह भूमि

पब्लिक सर्विस के लिए है। उद्योग लगने के लिए जो भी अनापत्ति लगती है उसका पालन नहीं किया गया- उद्योग विभाग धार द्वारा किसी क्षेत्र में उद्योग लगने के लिए जो भी अनापत्ति लगती है उसका पालन नहीं किया

गया इससे गौसेवकों में आक्रोश व्याप्त है। किसी भी भूमि का सीमांकन किया जाता है तो आसपास के भूधारकों को सूचना पर दिया जाता है वह भी नहीं दिया गया। प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार को भी सूचित नहीं किया गया

इससे यह मामला गर्मा गया है

गौ सेवा के लिए संवेदनशील सीएम को भी इस मामले से या तो अवगत नहीं कराया या फिर गुमराह किया गया

गौरतलब है कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव गौसेवा और गौसंरक्षण के लिए बेहद संवेदनशील हैं प्रसन उर रहे हैं कि उन्हें भी इस मामले से या तो अवगत नहीं कराया गया या फिर गुमराह किया गया है।

गौमाता की भूमि पर उद्योग विभाग को अतिक्रमण नहीं करने देंगे मुख्यमंत्री जी से चर्चा कर रूकवाएंगे-

विश्व हिन्दू परिषद गौसेवा क्षेत्र प्रमुख,

सोहन विश्वकर्मा

प्रकृति वात्सल्य गौशाला में बीमार पशुओं को रखा जाता है लगभग 300 गाय माता रहती हैं। उक्त भूमि पशुपालन विभाग की है विभाग से भी किसी भी तरह की अनापत्ति उद्योग विभाग ने नहीं ली है। गौशाला की चरनोई भूमि पर अतिक्रमण होता है तो गौवंश की दुर्दशा हो जाएगी।

धर्मन्द्र जोशी, अध्यक्ष प्रकृति वात्सल्य गौशाला, धार

ट्रिपल मर्डर केस: आरोपी को बेहोश करके 11 पुलिसकर्मी ले गये ग्वालियर

अब ग्वालियर के मानसिक रोगियों की विशेष जेल (आरोग्य केंद्र) में होगा इलाज

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिले के सावंगा गांव में अपने माता-पिता और भाई की हत्या करने वाला आरोपी दीपक धुर्वे का इलाज अब ग्वालियर के मानसिक रोगियों की विशेष जेल (मानसिक रोग आरोग्य केंद्र) में होगा। 11 पुलिसकर्मीयों की टीम ग्वालियर को उसे लेकर रवाना हुई। जहां मानसिक रोगी कैदियों के उपचार और निगरानी की व्यवस्था है। आरोपी का स्वभाव अत्यधिक आक्रामक होने के कारण उसे नौद की दवा दी गई थी। अर्ध बेहोशी की हालत में ही उसे ग्वालियर के लिए रवाना किया गया। पुलिस पिछले दो दिनों से उसे ले जाने की प्रक्रिया में जुटी थी। उल्लेखनीय है कि सावंगा गांव के दीपक धुर्वे ने गत 19 फरवरी को पिता राजू उर्फ हंसू धुर्वे (45), मां कमलती (40) और भाई दिलीप (23) की हत्या कर दी थी। इसके बाद वह दरवाजा बंद कर लाशों के पास ही बैठा रहा। कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची तो लाशें पड़ी हुई थीं और फर्श और दीवारों पर खून के धब्बे बिखरे हुए थे। वहीं 5 वर्षीय भांजे प्रशांत परते की हालत गंभीर होने पर उसे अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। दरअसल जब 19 फरवरी

पिता जब बेटे को बचाने के लिए आगे बढ़े, तो उन्होंने शायद दिलीप के ऊपर खुद को ढाल लिया, क्योंकि दोनों के शव एक-दूसरे से लिपट हुए मिले। मां कमलती ने जब यह देखा, तो वह बीच में आई, लेकिन दीपक ने उन पर भी हमला कर दिया होगा।

मानसिक रोगी बताया जा रहा आरोपी- दीपक के जीजा सुखचंद धुर्वे बताते हैं उसे दो साल से मानसिक परेशानी चल रही थी। एक साल से दौरे बहुत बढ़ गए थे। कभी-कभी वह जोर से चिल्लाता था। परिवार ने पहले

देवकरण ने बताया कि वारदात के समय उपस्थित मासूम भांजे के अनुसार आरोपी अपने छोटे भाई से मारपीट कर रहा था तब दिलीप का पिता बचाने आया। तब उसने उन्हें भी मारा। आरोपी का स्वभाव अत्यधिक आक्रामक होने के कारण उसे नौद की दवा दी गई थी और बेहोशी की हालत में ही ग्वालियर के लिए रवाना किया गया। मनोचिकित्सक डॉ. संजय खतारकर ने बताया, ऐसे मरीजों में शक, भ्रम, डर और आवाजें सुनाई देने जैसे लक्षण होते हैं। कई बार वे हिंसक हो जाते हैं। कई बार वे

खुद को नुकसान पहुंचाते हैं। यह पूरी तरह मानसिक बीमारी का असर है।

आरोपी इतना आक्रामक कि 11 पुलिसकर्मी उसे लेकर गए ग्वालियर- आरोपी को 11 पुलिसकर्मी लेकर ग्वालियर के लिए रवाना हुए। इससे पहले आरोपी को नौद की दवा दी गई। बताया जा रहा है कि सीजेएम कोर्ट ने आरोपी दीपक का जेल वारंट जारी किया था। हालांकि, बैतूल जेल प्रशासन ने मानसिक रोगी कैदियों को रखने की



जाम सांवरी के हनुमान मंदिर में भगत से इलाज कराया। वहां डायरेक्टर अजी लगाकर झाड़ू-फूंक की, फिर परिवार ने नागपुर के डॉक्टर को भी दिखाया। कुछ दिन पहले ही दीपक नागपुर से लौटकर आया था। जीजा बताते हैं जब भी उसे दौरा पड़ता था, शरीर कांपता था, मुंह से अजीब आवाजें निकलता था, फिर एक घंटे में शांत हो जाता था, लेकिन उसके बाद किसी से उल्टा-सीधा नहीं बोलता था। बताया जाता है कि आरोपी दीपक धुर्वे पढ़ाई में भी काफी होशियार था। उसने 12वीं कक्षा में टॉप किया था।

मानसिक रोगी आरोपी ने थाने में भी की मारपीट, स्वीकार की वारदात पर कारण नहीं बताया - कोतवाली टीआई देवकरण डेहरिया ने बताया कि दीपक को हिरासत में लेने के बाद भी वह बेहद एग्रेसिव रहा। पूछताछ में उसने वारदात तो स्वीकार की, लेकिन कारण नहीं बताया। रात को थाने में भी उसने एक बंदी से मारपीट की और पुलिसकर्मीयों पर भी हमले का प्रयास किया, जिसके बाद उसे जिला अस्पताल भेजा गया। जहां उसे हाथ पेर बांधकर रखा गया और अस्पताल के वार्ड के बाहर चार पुलिसकर्मी तैनात किए गए। टीआई

समुचित व्यवस्था न होने की जानकारी दी थी। इसके बाद वारंट को ग्वालियर स्थानांतरित करने की अनुरोध की गई। मेडिकल रिपोर्ट सहित अन्य आवश्यक औपचारिकताएं पूरी करने के बाद पुलिस ने आरोपी को ग्वालियर भेज दिया।

संभागायुक्त, पुलिस महानिरीक्षक पहुंचे थे गांव- घटना के बाद नर्मदापुरम रेंज के पुलिस महानिरीक्षक मिथिलेश कुमार शुक्ला, कमिश्नर केजी तिवारी, कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी और एसपी वीरेंद्र जैन भी गांव पहुंचे। अधिकारियों ने फोरेंसिक टीम से जानकारी लेने के साथ ग्रामीणों से भी बातचीत की थी। फिलहाल आरोपी को ग्वालियर जेल स्थित मानसिक आरोग्य केंद्र में चिकित्सकों की निगरानी में रखकर उसकी मानसिक स्थिति की जांच और उपचार की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

शांति समिति बैठक होली, रंगपंचमी, ईदुलफितर, नवरात्रि, रामनवमी पर्व शांति पूर्ण ढंग से मनाएं



सोहागपुर। नवीन पुलिस थाना परिसर में आगामी त्यौहारों को तहसीलदार आर. एस. झरबड़े, एसडीओ पुलिस संजु चौहान, नगर निरीक्षक उषा मरावी, बीएमओ डॉ. रेखा गौर आदि की उपस्थिति में शांति समिति की बैठक संपन्न हुई। इस अवसर पर तहसीलदार आरके झरबड़े, एसडीओ पुलिस संजु चौहान, नगर निरीक्षक उषा मरावी ने आगामी त्यौहारों की जानकारी दी। जिसमें होली दहन 2 मार्च 3 मार्च होली, 8 मार्च रंगपंचमी 19 मार्च से नवरात्र पूर्व, 21 मार्च ईदुलफितर एवं 27 मार्च को रामनवमी पर्व होने की जानकारी दी गई।

अधिकारियों ने नागरिकों से समस्त त्यौहारों को शांति से मनाने की अपील की गई। पुलिस ने बताया कि होली एवं रंगपंचमी आदि पर पुलिस सुरक्षित रहेगी। इस अवसर पर नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल, विजय धुर्वे, पाषंड गण जमील खां एवं गौरव पालीवाल, मुस्लिम त्योहार कमेटी अध्यक्ष वसीम खान यासीन खां राशिद खान, मो अकबर खान ताज मोहम्मद आरिफ खान शेख रहमान, फिरोज खान, अब्दुर हुसैन, अमित परसाई, एएसआई गणेश राय, पूर्व पाषंड जगदीश अहिरवार, आदि उपस्थित थे।

शोभापुर, गुरमखेड़ी, बागरातवा रेलवे स्टेशनों को चाहिए सुविधाएं, सोहागपुर की आवश्यकता है तत्काल ओवर ब्रिज

सोहागपुर विधानसभा के शोभापुर, सोहागपुर, गुरमखेड़ी, बागरातवा रेलवे स्टेशन देश की आजादी के बाद से अभी तक विकास की राह ताक रहे हैं। कहने को तो इस क्षेत्र ने कांग्रेस एवं भाजपा के नामचीन सांसदों को चुनकर लोकसभा में पहुंचाया है। जिसमें नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सहयोगी स्वर्गीय हरविष्णु कामध्व, कांग्रेस के स्वर्गीय सैयद मुसा प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू एवं प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री से विशेष संबंध थे। कांग्रेस के केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री स्वर्गीय नीतिलाल जिंसिंह चौधरी, रामेश्वर नीखरा जो स्वर्गीय संजय गांधी के खासे विश्वासपात्र रहे, भाजपा के स्वर्गीय सरताजसिंह, राव उदयप्रतापसिंह एवं वर्तमान में चौधरी दर्शनसिंह को क्षेत्र की जनता ने समय समय पर लोकसभा की देहरी पर चढ़ाया है। लेकिन इस क्षेत्र की जनता-जनार्दन को उन्होंने क्या दिया? सांसद निधि को तो कोई भी निर्वाचित सांसद हो प्रदान कर सकता है लेकिन काम दिखाना चाहिए जनता-जनार्दन को। हम यदि कामध्व साहब की बात करें तो उन्होंने नर्मदापुरम को करंसी नोट कारखाना देकर ए श्रेणी में खड़ा कर दिया था।

वहीं आपने सोहागपुर के लिए महत्वपूर्ण योजना बनवाई थी कि सोहागपुर के आदिवासी बहुल ग्रामों से छोटी ट्रेन पसमढ़ी तक चले। संयोग से वह योजना अधूरी रह गई है। अन्यथा आज सोहागपुर धार का कायकल्प हो चुका होता। इधर क्षेत्रीय सांसदों ने



शोभापुर सोहागपुर गुरमखेड़ी बागरातवा रेलवे स्टेशनों की सुध ही नहीं ली। उक्त स्टेशन अपनी बदहाली एवं स्टोपेज के अभाव के कारण क्षेत्र एवं जनता का विकास को अवरुद्ध कर रही है। सोहागपुर रेलवे स्टेशन का दूसरा प्लेटफार्म काफी नीचा है। छाया का स्थान भी काफी कम है रेल स्टोपेज की भी आवश्यकता है। वहीं सोहागपुर रेलवे स्टेशन दूसरी तरफ दो वार्ड इन्दिरा एवं तिलक वार्ड यहां आबादी काफी बढ़ चुकी है। वहीं बीसियों आदिवासियों ग्रामीणों को आवागमन के रास्ते पर सम्भार रेलवे गेट है जो आधे घंटे घंटे बंद रहता है। इस कारण वाहनों एवं नागरिकों छत्र, छात्राओं की बड़ी भीड़ एकत्रित हो जाती है। यहां ओवर ब्रिज की तत्काल आवश्यकता है। कई संगठनों ने आवाज उठाई। लेकिन राजनेताओं ने केवल समय समय पर सज्जबाव भी दिखाए। लेकिन धरातल पर उतारा नहीं।

ग्राम सेमरीहरचंद के पूर्व सैनिक नीमचंद कुशवाहा एवं प्रमोद गुप्ता ने बताया कि गुरमखेड़ी रेलवे स्टेशन पर सुविधाओं का अभाव है। आपने बताया कि सुह विद्यालय एक्सप्रेस (बीना एक्सप्रेस) के बाद इटारसी जाने के लिए शाम तक कोई ट्रेन नहीं है वहीं सुबह इटारसी कटनी मेमू ट्रेन के बाद जबलपुर जाने के लिए शाम तक कोई ट्रेन नहीं है। कोरोना काल में इन्दौर बिलासपुर एक्सप्रेस, जनता मुम्बई एक्सप्रेस आदि ट्रेनों का स्टोपेज था। लेकिन वर्तमान समय में क्षेत्र में विकास की काफी संभावनाएं हैं। लेकिन रेल की दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे क्षेत्र को आजादी ही नहीं मिली है। अधिकार हमारे लोकप्रिय सांसदगण भारी मतों से विजय प्राप्त करके केवल सांसद निधि बंटकर इतिथि क्यों कर लेते हैं?।

डॉ. तुषि अग्रवाल एम.एस. की उपाधि से सम्मानित

बैतूल। शहर के प्रसिद्ध बीआर अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय व श्रीराम फार्मेसी कॉलेज जामठी के संचालक इंजीनियर भ्रवकराश अग्रवाल की सुपुत्री डॉ. तुषि अग्रवाल को एमएस (स्त्री रोग विशेषज्ञ) की उपाधि डी. न्याय विश्वविद्यालय नवी मुम्बई में आयोजित दीक्षांत समारोह में कुर्ताधिपति द्वारा प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि का श्रेय डॉ. तुषि अग्रवाल ने अपने दादाजी शिक्षाविद स्व. डॉ. मंगल प्रसाद अग्रवाल को दिया है। डॉ. तुषि का कहना है कि उनके कुशल मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से ही उन्होंने सफलता प्राप्त की। साथ ही माता-पिता और पूरे परिवार को इस सफलता का श्रेय जाता है। डॉ. तुषि अग्रवाल ने कहा कि चिकित्सक बनकर लोगों की सेवा करना अपने आप में सौभाग्य की बात है, क्योंकि चिकित्सा के जरिये से पीड़ितों की सेवा का अवसर मिलता है।



संचार करने के लिए भजन मंडली द्वारा सुंदरकांड का पाठ किया गया, जिसकी मधु प्रस्तुतियों ने उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर मेला सह संयोजक दीपक बिडकर, मिलन पाल, कालीचरण सोनवानीया, ममता जोशी, आशिष परिहार, विशाल निगम (भाजपा मंडल अध्यक्ष) एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मेले के मुख्य आकर्षण- मेला न

केवल व्यापार का केंद्र है, बल्कि मनोरंजन का भी एक बड़ा संगम बनकर उभरा है। इस वर्ष मेले में विशाल झूले, बच्चों के लिए जलपरी (वाटर फ्लिर्टविटी) खान-पान विभिन्न क्षेत्रों के स्वादिष्ट व्यंजनों के फूड स्टॉल्स, हस्तशिल्प, स्वदेशी निर्मित घरेलू सामान और पारंपरिक दुकानें प्रतिदिन होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम लोगों का ध्यान खींच रहे हैं।

रेल रुकगी तरकी बढ़गी

रेल समस्याओं को लेकर कांग्रेस की विशाल पदयात्रा, प्रदेश कांग्रेस सह प्रभारी होगी शामिल

सोहागपुर। सोहागपुर विधानसभा के माखनगर तहसील के रेलवे स्टेशन बागरातवा में कोरोना काल से पूर्व कुछ यात्री ट्रेन रुका करती थी लेकिन आज कोरोना काल को बीते पाँच के बाद रेल प्रशासन ने एक मात्र मेमो गाड़ी को छोड़कर सभी यात्री गाड़ियाँ बन्द कर दी हैं। इसी समस्याओं को लेकर 22 फरवरी को 11 बजे से माखन चौक से जिला कांग्रेस एवं ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में विशाल पदयात्रा निकाली जाएगी। यात्रा शाम 5 बजे बागरातवा पहुंचेगी। पूर्व विधानसभा विधायक प्रयाशी एवं कांग्रेस नेता पुष्पराज सिंह पटेल ने इस प्रतिनिधि को बताया कि इस पदयात्रा में प्रदेश कांग्रेस सह प्रभारी श्रीमती उषा नायडू जी भी शामिल होंगी। बागरातवा स्टेशन मास्टर को ज्ञापन भी सौंपा जाएगा। श्री पटेल ने कहा कि रेल प्रशासन 64, पंचायतों एवं करीबन 120 ग्रामों के नागरिकों की अनदेखी, अनसूनी कर रहा है। इस कारण रेलवे को जगाने के लिए पदयात्रा की जा रही है। इस अवसर पर जिला प्रभारी ओम पटेल, पूर्व विधायक संजय शर्मा, जिला कांग्रेस अध्यक्ष शिवकांत (गुड्डन) पाण्डेय, जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष विजय बाबू चौधरी आदि भारी संख्या में कार्यकर्ता एवं नागरिक उपस्थित रहेंगे।



किंग खान अब दिखाई देंगे 'किंग' में

शाहरुख खान सिद्धार्थ आनंद निर्देशित एक्शन थ्रिलर फिल्म 'किंग' में एक खूंखार हत्यारे की भूमिका में नजर आएंगे। रेट टिलीज एंटरटेनमेंट और मार्फिलक्स पिक्चर्स निर्मित यह फिल्म इस साल क्रिसमस पर रिलीज होगी, जिसमें उनकी बेटी सुहाना खान और दीपिका पादुकोण भी अहम भूमिकाओं में हैं। लंबे अरसे बाद शाहरुख खान परदे पर दिखाई देंगे।

शाहरुख खान को उनके फैंस कई नामों से जानते हैं। पर, सबसे ज्यादा जिस नाम से उन्हें पुकारा जाता है वो है 'किंग खान'। उन्हें हिंदी सिनेमा का 'किंग' कहा जाता है। हालांकि तीन दशक के करियर में उन्होंने 'किंग' नाम से कोई फिल्म नहीं की। पर, ये कमी अब जल्द पूरी होने वाली है। बॉलीवुड के किंग अब बड़े परदे पर भी 'किंग' बनकर छाने को तैयार हैं। हाल ही के एक इंटरव्यू में शाहरुख ने 'किंग' शब्द को लेकर बात की। इस दौरान उन्होंने बताया कि उनके लिए इस शब्द का आखिर मतलब क्या है।

उन्होंने एजेंसी को एक ईमेल इंटरव्यू दिया, जिसमें उन्होंने खुद को मिले 'किंग' टैग पर बात की। वो कहते हैं, 'किंग' शब्द का मतलब मेरे लिए कभी भी पावर नहीं रहा। ये हमेशा एक जिम्मेदारी की तरह है, उन लोगों के लिए जो आप पर यकीन करते हैं, और उन कहानियों के लिए, जिन्हें आप बताने का फैसला करते हैं।'

शाहरुख ने कहा कि वक्त गुजरने के साथ आपको एहसास होता है कि किसी टाइल से कोई फर्क नहीं पड़ता, बल्कि आप जो करते हैं उससे फर्क पड़ता है। वो कहते हैं कि अपनी जिंदगी और करियर के इस पड़ाव पर, 'किंग' का टाइल पहचान कम और इस बात की ज्यादा याद दिलाता है कि दिल से, विनम्रता से और उद्देश्य के साथ जीना चाहिए। चाहे वो डिज्नी एडवेंचर फिल्म की कहानी सुनाना हो या फिर मेरी आगली फिल्म का चुनाव करना, मुझे सबसे ज्यादा इस बात से फर्क पड़ता है कि मैं कुछ ऐसा काम करूँ, जो लोगों को साथ लाए, उन्हें कुछ महसूस कराए और उन्हें थोड़ी खुशियां दे जाए।

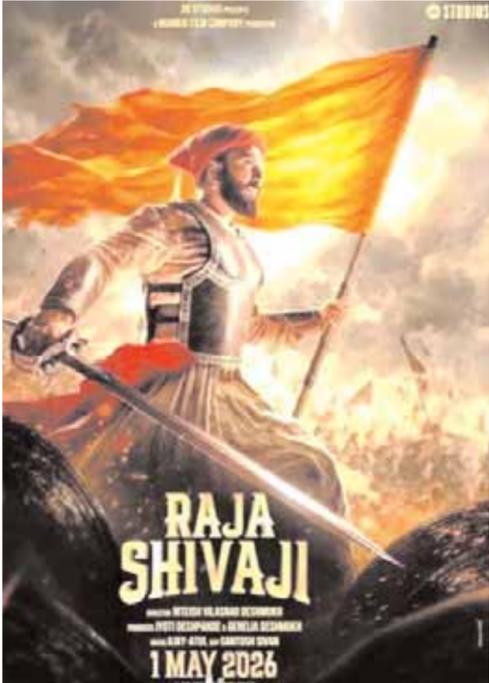


शाहरुख खान के लिए फिल्म 'किंग' कई वजहों से खास है। एक तो इस फिल्म का टाइल ही खास है, वहीं दूसरा इस फिल्म के जरिए ही उनकी बेटी सुहाना खान बड़े परदे पर कदम रखना चा रही हैं। 'द आर्चीज' से लाइट कैमरा एक्शन की दुनिया में ओटीटी के जरिए डेब्यू करने वाली सुहाना 'किंग' में अहम रोल में दिखाई देंगी। इस फिल्म में अभिषेक बच्चन, दीपिका पादुकोण भी अहम रोल

में होंगे और फिल्म का निर्देशन सिद्धार्थ आनंद कर रहे हैं। शाहरुख पिछली बार बड़े परदे पर 2023 में आई 'जवान' में नजर आए थे। तभी से फैंस शाहरुख की नई फिल्म का इंतजार कर रहे थे, और अब यह खत्म हो गया है। शाहरुख के बर्थडे पर तो 'किंग' का टीजर और एक्टर का फर्स्ट लुक रिलीज किया गया। अब शाहरुख ने फिल्म के नए टीजर के साथ मूवी की रिलीज डेट भी बता दी। 'किंग' के टीजर सी शुरुआत होती है, शाहरुख को बर्फीले पहाड़ों के बीच चोटी पर खड़े होकर चीखते हुए दिखाया जाता है।

वे जखमी हालत में हैं। और फिर एक शीशे तोड़ते हुए एक बिल्डिंग में कूदते दिखाए जाते हैं। सीने पर गहरे जखम हैं। शरीर और चेहरा खून से लथपथ है और आंखों में गुस्से की ज्वाला। फिर एक सीन आता है, जिसमें शाहरुख जोर से चिल्लाते हुए किसी को मुक्के से मारते नजर आ रहे हैं। आंखों में खूबखारण साफ नजर आ रहा है। टीजर के आखिर में शाहरुख की आवाज आती है 'इत नहीं दहशत हूँ।'

'राजा शिवाजी' का पहला पोस्टर सामने आया



त्रपति शिवाजी महाराज जयंती के पावन अवसर पर बहुप्रतीक्षित ऐतिहासिक फिल्म 'राजा शिवाजी' का पहला दमदार पोस्टर जारी किया। फिल्म के निर्देशक और मुख्य अभिनेता रितेश विलासराव देशमुख ने सोशल मीडिया पर यह पोस्टर साझा किया। इसमें वह छत्रपति शिवाजी महाराज के रूप में नजर आ रहे हैं। पोस्टर में महाराज का प्रभावशाली साइड प्रोफाइल दिखाई देता है। हाथ में तलवार, मजबूत कंधे और अडिग नजर। उनका गंभीर और दृढ़ चेहरा उस तूफान से पहले की शांति को दर्शाता है, जो स्वराज्य की स्थापना और राष्ट्र के गौरव की शुरुआत बना।

'राजा शिवाजी' एक भव्य पैन-ड्रिडिया सिनेमाई प्रस्तुति है, जिसे वैश्विक मंच पर भारतीय संस्कृति के गौरव के रूप में पेश किया जा रहा है। यह एक महत्वाकांक्षी द्विभाषी (मराठी और हिंदी) एक्शन-ड्रामा फिल्म है, जिसमें संगीत दिया है प्रसिद्ध जोड़ी अतुल ने और सिनेमैटोग्राफी संभाली है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित संतोष सिवन् ने। यह फिल्म अपने विशाल पैमाने और शानदार दृश्यात्मक अनुभव के लिए तैयार है। यह फिल्म न केवल एक राजा की कहानी है, बल्कि एक ऐसे वेटे की यात्रा है जिसने एक संकल्प लिया और बड़ी शक्तियों के खिलाफ खड़े होकर स्वराज्य का मार्ग प्रशस्त किया था। यह उस महान योद्धा की गाथा है जिसने झुकने के बजाय संघर्ष चुना और भारत के स्वाभिमान की नींव रखी। 'राजा शिवाजी' 1 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है। एक बार फिर इतिहास जीवंत होने जा रहा है और एक महान गर्जना पूरे भारत और दुनियाभर में गूँजे को तैयार है!

रियल बॉक्स

युद्ध फिल्मों की सीमा रेखा तोड़ती 'बॉर्डर'

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।



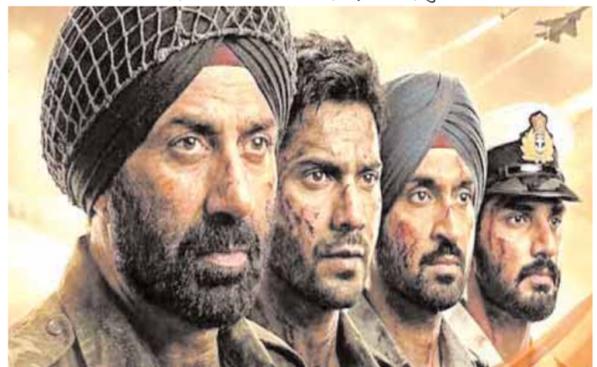
'बॉर्डर' फिल्म हिंदी की उन युद्ध कथानक वाली फिल्मों में है, जिसने सिर्फ सीमा पर एक युद्ध ही नहीं दिखाया, बल्कि सैनिकों के दिल की भावनाएँ, उनका डर, उनकी उम्मीदें और उनके परिवारों के दर्द को भी बड़े परदे पर उतार दिया। 1997 में आई जेपी दत्ता की फिल्म 'बॉर्डर' ने देशभक्ति की भावनाओं को जिस सादगी और गहराई के साथ प्रस्तुत किया, वह आज भी दर्शकों के दिल में बसी है। वहीं 2026 में आई 'बॉर्डर-2' उसी विरासत को आगे बढ़ाने की कोशिश करती है। लेकिन, नए दौर की तकनीक, नए कलाकारों की ऊर्जा और एक बड़े युद्ध-कैनवास के साथ, जब दोनों फिल्मों के कथानक, कलाकारों के अभिनय और निर्देशन को तुलनात्मक रूप से देखा जाए, तो स्पष्ट होता है, कि भारतीय सिनेमा ने युद्ध की कहानियों को कैसे समय के साथ बदला और दर्शकों की अपेक्षाओं भी किस तरह विकसित हुईं। पहली फिल्म 'बॉर्डर' की ताकत उसकी सादगी और मानवीय दृष्टिकोण में थी। फिल्म में युद्ध सिर्फ गोलियों और टैंकों की लड़ाई नहीं था, बल्कि हर सैनिक के भीतर चल रही भावनात्मक लड़ाई भी थी। हर किरदार की अपनी कहानी थी। किसी की प्रेम कहानी, किसी की परिवारिक जिम्मेदारी, किसी का व्यक्तिगत डर और इन सबके बीच देश के लिए खड़े होने का जुनून। यही वजह थी कि दर्शक हर किरदार से भावनात्मक रूप से जुड़ गए थे। तकनीकी सीमाओं के बावजूद फिल्म के युद्ध दृश्य इतने प्रभावी थे, कि वे वास्तविकता का अनुभव का अहसास कराते थे। उस दौर की अभिनय शैली में जो सच्चाई और गंभीरता थी, उसने फिल्म को एक क्लासिक बना दिया।

इसी सीरीज की नई फिल्म 'बॉर्डर-2' की बात करें, तो यह एक अलग समय काल की फिल्म है। इतने लंबे अंतराल में दर्शकों के सोच और उनकी पसंद में काफी अंतर आया। आज के दर्शक बड़ा कैनवास, तेज गति और भव्य दृश्यों की अपेक्षा करते हैं। यही वजह है कि फिल्म उसी तरह से दिशा में आगे बढ़ती है। कथानक को सिर्फ एक मोर्चे तक सीमित रखने के बजाय इसे तीन अलग-अलग सैन्य क्षेत्रों थल सेना, नौवी और वायु सेना तक बढ़ाया गया है। इससे युद्ध का दायरा व्यापक और अधिक प्रभावशाली महसूस होता है। फिल्म कई किरदारों के दृष्टिकोण से आगे बढ़ती है, जो दर्शकों को युद्ध की बहुआयामी तस्वीर दिखाती है। फिल्म का यह विस्तार उसे आधुनिक युद्ध-फिल्मों की श्रेणी में लाता है, लेकिन साथ ही कहानी को भारी और लंबा भी बनाता है। दोनों फिल्मों को निर्देशन के नजरिए से देखें, तो पहली वाली 'बॉर्डर' में भावनाओं का संतुलन सबसे बड़ी ताकत था। निर्देशक ने युद्ध के दृश्यों को भी मानवीय संवेदनाओं से जोड़कर पेश किया था। वहीं 'बॉर्डर-2' का निर्देशन अधिक दृश्यात्मक और बड़े पैमाने पर केंद्रित है। फिल्म धीरे-धीरे किरदारों की पृष्ठभूमि बनाती है और फिर युद्ध को के साथ ज्यादा वक्त खिनाते का मौका मिलता है। हालांकि, कुछ जगहों पर यह धीमापन दर्शकों को लंबा भी लगता है। खासकर तब जब वे तेज पफ्तार वाले एक्शन की उम्मीद लेकर आए हों। तकनीकी रूप से फिल्म आधुनिक है, लेकिन कुछ आलोचनाएं भी सामने आईं कि सभी विजुअल इफेक्ट्स उतने प्रभावशाली नहीं लगे जितनी की उम्मीद की गई थी।

90 के दशक में जब भारतीय सिनेमा में युद्ध-शैली की फिल्मों की संख्या सीमित थी, तब

जेपी दत्ता की 'बॉर्डर' ने युद्ध दृश्यों से कहीं आगे जाकर सैनिकों के मानवीय संघर्ष, दोस्ती, साहस और परिवार के दर्द को बड़े कैनवास पर उतारा। फिल्म 1971 के भारत-पाक युद्ध के लोंगेवाला युद्ध और उससे जुड़ी घटनाओं पर केंद्रित थी। असली लोकेशनों, वास्तविक हथियारों और सेना के सहयोग से फिल्म को हर फ्रेम में यथार्थवादी बनाकर पेश किया था। उस समय सीमित तकनीक के बावजूद 'बॉर्डर' के युद्ध दृश्य आज भी उतने ही प्रभावशाली लगते हैं। 'संदेश आते हैं' जैसे गीत और वीर-देश भक्ति के भाव ने दर्शकों के दिल में इसे अनमोल बना दिया। फिल्म ने युद्ध को केवल गोली-बारूद की लड़ाई नहीं माना, बल्कि भावनात्मक संघर्ष का चित्रण किया, जो इसे सिनेमा में विशिष्ट बनाता है। 1997 की 'बॉर्डर' ने भारतीय सिनेमा में यह स्थापित किया कि युद्ध फिल्म केवल युद्ध नहीं होती, यह भावनाओं का युद्ध भी है। इसने सैनिकों की पृष्ठभूमि, उनके परिवारिक संबंध और भाईचारा को सामने

जिम्मेदारी और एक इंसान की संवेदनाओं दोनों को अच्छी तरह निभाया है। दिलजीत दोसांझ ने अपने किरदार में आत्मविश्वास और भावनात्मक गहराई का अनूठा मिश्रण दिया, जिससे उनके दृश्य यादगार बनते हैं। अहान शेठ्टी जैसे युवा कलाकारों ने भी अपने अभिनय से यह दिखाने की कोशिश की, कि नई पीढ़ी युद्ध-फिल्मों में अपनी अलग पहचान बना सकती है, हालांकि कुछ दर्शकों को उनके एक्शन दृश्यों में थोड़ी कमी महसूस हुई। जहां तक दर्शकों की प्रतिक्रिया की बात है तो यह मिश्रित लेकिन समीक्षात्मक रही। एक तरफ फिल्म की भव्यता, देशभक्ति का भाव और बड़े स्तर का प्रस्तुतिकरण लोगों को आकर्षित करता है, वहीं कुछ पुराने दर्शकों को लगता है कि मूल 'बॉर्डर' की भावनात्मक सादगी और गहराई को पूरी तरह दोहराना आसान नहीं था। यही किसी भी क्लासिक फिल्म के सीक्वल की सबसे बड़ी चुनौती होती है। यानी विरासत को संभालते हुए नई पीढ़ी के लिए कुछ नया पेश करना। 'बॉर्डर-



लाया। प्रत्येक किरदार की व्यक्तिगत चुनौतियां और उनके मन की लड़ाइयां भी उतनी ही महत्वपूर्ण दिखी जितनी युद्धभूमि की लड़ाइयां।

युद्ध कथानक वाली ज्यादातर फिल्में सिर्फ एक्शन और दृश्य प्रभावों पर जोर देती हैं। 'बॉर्डर-2' में युद्ध के बीच व्यक्तिगत रिश्तों, आंतरिक संघर्षों और मानवीय पहलुओं को गहराई से दिखाया गया, जो इसे साधारण युद्ध दृश्यों से ऊपर उठाता है। यह फिल्म जमीन, हवा और समुद्र तीनों मोर्चों पर संघर्ष दिखाकर युद्ध को एक बड़ी तस्वीर में बदल देती है। यह अलग और व्यापक दृष्टिकोण देती है, जो साधारण दो-पक्षीय संघर्ष से कहीं आगे है। 'बॉर्डर-2' सिर्फ सैनिकों की वीरता को दिखाने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके परिवारों, सपनों और आशाओं को भी सामने रखता है। इससे दर्शक न केवल एक्शन बल्कि इंसानी रिश्तों को भी महसूस करते हैं। यह फिल्म सिर्फ पुराने रिसतारों पर निर्भर नहीं है। वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ, अहान शेठ्टी जैसे नई पीढ़ी के कलाकारों ने अपने किरदारों में आध्यात्मिक और भावनात्मक गहराई लाकर फिल्म को संतुलित किया है। 'बॉर्डर-2' अपनी विरासत को सम्मान देते हुए भारतीय युद्ध-सिनेमा की एक नई दास्तान पेश करती है। यह फिल्म दर्शकों को सिर्फ युद्ध की कहानी नहीं सुनाती, बल्कि पृथ्वी के तीनों आयामों पर देशभक्ति, भाईचारे, आत्म-बलिदान और व्यक्तिगत मानवीय भावनाओं का मिश्रण प्रस्तुत करती है।

अभिनय की बात करें तो 'बॉर्डर-2' की सबसे बड़ी खासियत अनुभवी और नए कलाकारों का मिश्रण है। सनी देओल की उपस्थिति फिल्म में भावनात्मक मजबूती और एक परिचित वीरता का एहसास देती है। उनकी स्क्रीन प्रेजेंस आज भी दर्शकों को वहीं पुरानी ऊर्जा महसूस कराती है, जो उन्होंने पहले भाग में दिखाई थी। नई पीढ़ी के कलाकारों में वरुण धवन का प्रदर्शन काफी परिपक्व और संतुलित माना गया। उन्होंने अपने किरदार में एक सैनिक की

'2' इस संतुलन को बनाने की कोशिश करती है और कई जगह सफल भी रही। खासकर तब जब फिल्म व्यक्तित्व कहानियों और सैनिकों के मानवीय पक्ष पर ध्यान देती है।

आगर ईसे अन्य युद्ध फिल्मों से अलग देखने की कोशिश करें तो 'बॉर्डर-सीरीज' की खासियत यही है, कि यह युद्ध को सिर्फ एक्शन या राष्ट्रवादी भाषणों तक सीमित नहीं करती। यहां सैनिकों के परिवार, उनकी यादें, उनके सपने और उनके डर भी कहानी का हिस्सा बनते हैं। 'बॉर्डर-2' इस परंपरा को बनाए रखने की कोशिश करती है, भले ही उसका पैमाना ज्यादा बड़ा और शैली ज्यादा आधुनिक हो गई। तीन अलग-अलग सैन्य क्षेत्रों को दिखाने से युद्ध की व्यापकता पूरी भव्यता से सामने आती है और दर्शकों को यह एहसास होता है कि युद्ध सिर्फ सीमाओं पर नहीं, बल्कि हर दिशा में चलने वाला एक समग्र संघर्ष होता है। दोनों फिल्मों में देखने वाले दर्शकों को हिंदी युद्ध-सिनेमा का विकास दिखाई देता है। पहली फिल्म भावनात्मक गहराई और यथार्थवादी अभिनय की वजह से आम जन मन गई, जबकि दूसरी फिल्म आधुनिक तकनीक, नए कलाकारों और बड़े कैनवास के जरिए उसी विरासत को नए समय में जीवित रखने की कोशिश करती है। हो सकता है कि हर दर्शक को दोनों फिल्मों में समान भावनात्मक जुड़ाव महसूस न हो, लेकिन यह भी सच है कि 'बॉर्डर-2' ने नई पीढ़ी के दर्शकों को युद्ध-कथाओं से जोड़ने का एक नया रास्ता खोला है। यह फिल्म उन लोगों के लिए एक भव्य अनुभव है, जो बड़े पैमाने की युद्ध कहानियाँ पसंद करते हैं। उन लोगों के लिए भी एक दिलचस्प तुलना का अवसर है, जो मूल 'बॉर्डर' की सादगी और भावनात्मक गहराई को याद करते हैं। दोनों फिल्मों में मिलकर साबित करती हैं कि जब युद्ध की कहानियों में इंसानी दिल की धड़कन शामिल होती है, तभी वे लंबे समय तक दर्शकों के मन में जमाना समेत तक जीवित भी रहती हैं।

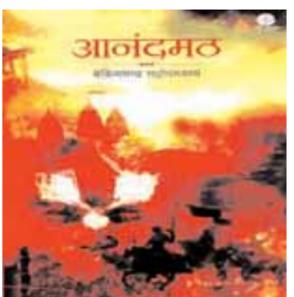
- hemantpal60@gmail.com / 9755499919

परदे पर फिर दिखाई देगा 'वंदे मातरम' का उद्घोष



अशोक जोशी

इन दिनों वंदेमातरम को लेकर राजनीतिक विवाद छाया हुआ है। फिल्मों में इसे सबसे पहले 'आनंदमठ' के माध्यम से 1952 में परदे पर उतारा गया था। आज जब इसका विवाद गहरा रहा है, तो इसे फिर भव्यता के साथ परदे पर उतारने की कवायद तेज हो



गई '1770' नाम की यह फिल्म

'आनंदमठ' का नया और भव्य स्वरूप होगा। फिल्म '1770' दरअसल 30 जून 1952 को प्रदर्शित 'आनंदमठ' फिल्म में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने अंग्रेजों की चूले हिला देने वाले महादूत संन्यासी आंदोलन के उन अनाम शहीदों को याद किया गया, जिसके बारे में आज भी शायद देश के लोग ज्यादा नहीं जानते।

आ | म तौर पर हमारे इतिहास में मई 1857 के विद्रोह को भारत का पहला स्वाधीनता संग्राम कहा गया है। लेकिन, उससे पहले 1770 में हुए इस संन्यासी विद्रोह को अंग्रेज इतिहासकार अपनी सुविधानुसार सन्यासियों के भेष में सिर्फ लुटेरों की लूटमार ही बताते रहे, जो सही नहीं है। इस बात को प्रमुखता से फिल्म 'आनंदमठ' के निर्माता हेमंत गुप्ता ने फिल्म में दर्शाया था। इसे 1872 में प्रकाशित बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित कालजयी कृति 'आनंदमठ' पर बनाया था। भारत को 'वंदे मातरम' का मूल मंत्र देने वाली 'आनंदमठ' संन्यासी आंदोलन पर बनी पहली और शायद आखिरी फिल्म है। लेकिन, अब यह कीर्तिमान शीघ्र ही टूटने जा रहा है।

दक्षिण के ख्यातिनाम निर्देशक अश्विन गंगारजू 'आरआरआर' की सफलता के बाद अब सिनेमा के बड़े परदे पर भव्य रूप में आनंदमठ को प्रस्तुत करने जा रहे हैं। '1770' शीर्षक से बनने वाली यह फिल्म निश्चित ही बहुत भव्य होगी जो भारत के अनाम शहीदों की अनसुनी दास्तान को शिद्द के साथ पेश करेगी। दर्शकों को इस बात पर आर्पित थी, कि भारतीय सिनेमा असली नायकों के योगदान और देश के असल इतिहास के अनुसार फिल्में नहीं बनाता। भारत के वास्तविक इतिहास को भी चित्रित नहीं किया जाता। परंतु, अब यह शिकायत कुछ हद तक 'कश्मीर फाइल्स' और 'रैदम कुमर रूथिरम' ने पूरी कर दी। इन दोनों फिल्मों की भारी सफलता के बाद 'आनंदमठ' उपन्यास का भारतीय कंटेंट एक क्रांतिकारी बदलाव का साक्ष्य बनने जा रहा है, जिसके सूत्रधार होंगे वी विजयेन्द्र प्रसाद। 'आरआरआर' की अपार सफलता से प्रेरित होकर अश्विन गंगारजू ने एक भव्य प्रोजेक्ट बनाने का निर्णय किया। यह प्रोजेक्ट फिल्म और एक वेब सीरीज के रूप में परदे पर आएगा।

जहां तक 1952 में प्रदर्शित हेमंत गुप्ता द्वारा निर्देशित 'आनंदमठ' 1952 का सवाल है, तो यह हिंदी की ऐतिहासिक ड्रामा फिल्म है, जो बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के इसी नाम से लिखे गए उपन्यास और 1770 के दौरान बंगाल में हुए संन्यासी विद्रोह की घटनाओं पर आधारित है। बीबीसी वर्ल्ड सर्विस 2003 द्वारा 165 देशों में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित, हेमंत कुमार के संगीत निर्देशन में लता मंगेशकर द्वारा गाए गए गीत वंदे मातरम को अब तक के विश्व के शीर्ष दस गीतों में दूसरा स्थान दिया गया था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी के पत्र व्यवहार में कई बार फकीरों और संन्यासियों के छापे



का उल्लेख किया गया है। 1770 ईस्वी में पड़े बंगाल में भीषण अकाल के बाद भी अंग्रेज अफसर कर वसूलने पर जोर देते हैं। इसके विरुद्ध सनान संन्यासियों ने विद्रोह का बिगुल फूँका था। ये संन्यासी धार्मिक भिक्षु थे, पर मूलतः वे किसान थे, जिनकी जमीन छीन ली गई थी।

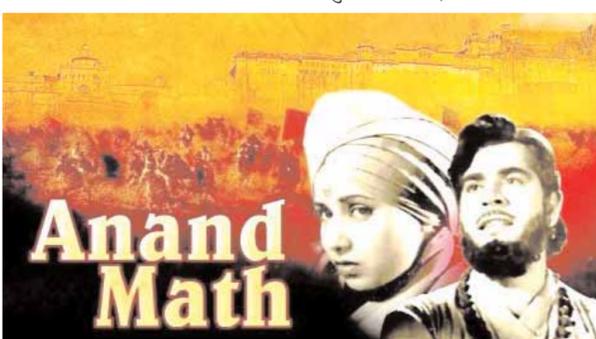
इन किसानों की बढ़ती दिक्कतें, बढ़ता भू-राजस्व, 1770 ईस्वी में पड़े अकाल के कारण छोटे-छोटे जमींदार, कर्मचारी, सेवानिवृत्त सैनिक और गांव के गरीब लोग इन संन्यासी दल में शामिल हो गए। यह बंगाल और बिहार में 5 से 7 हजार लोगों का दल बनाकर घूमा करते थे और आक्रमण के लिए ये छापामार यानी गोरिल्ला तकनीक अपनाते थे। आरंभ में यह लोग अमीर व्यक्तियों के अन्न भंडार को लूटा करते थे। बाद में सरकारी पदाधिकारियों को लूटने लगे और सरकारी खजाने को भी नुकसान पहुंचाने लगे, कभी-कभी ये लूटे हुए पैसे को गरीबों में बांट दिया करते थे।

समकालीन सरकारी रिकॉर्ड में इस विद्रोह का उल्लेख इस प्रकार है 'संन्यासी और फकीर के नाम से जाने जाने वाले डकैतों का एक दल है, जो इन इलाकों में अत्यवस्था फैलाए हुए हैं और तीर्थ यात्रियों के रूप में बंगाल के कुछ हिस्सों में भिक्षा और लूटपाट मचाने का काम करते हैं। क्योंकि, यह उन लोगों के लिए आसान काम है। अकाल के बाद इनकी संख्या में अपार वृद्धि हुई। भूखे किसान इनके दल में शामिल हो गए, जिनके पास खेती करने के लिए न बीज था और न साधन।



1772 की ठंड में बंगाल के निचले भूमि की खेती पर इन लोगों ने काफी लूटपाट मचाई थी। 50 से लेकर 1000 तक का दल बनाकर इन लोगों ने लूटने, खसोटने और जलाने का काम किया।

जबकि, यह एक तरह से स्वतंत्रता आंदोलन ही था, जिसे बंगाल के गिरि संप्रदाय के संन्यासियों द्वारा शुरू किया गया था,



जिसमें जमींदार, कृषक तथा शिल्पकारों ने भी भाग लिया। इन सभी ने मिलकर ईस्ट इंडिया कंपनी को कोठियों और कोषों पर आक्रमण किए। ये लोग अंग्रेजों से बहुत वीरता से लड़े। इन विद्रोह के प्रमुख नेताओं में केना सरकार, दिर्जानारायण, मंजर शाह, देवी चौधरानी,

भवानी पाठक उल्लेखनीय हैं। 1880 तक बंगाल और बिहार में अंग्रेजों के साथ संन्यासी और फकीरों का विद्रोह होता रहा। इन विद्रोहों का दमन करने के लिए अंग्रेजों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी। बंगाल भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का सन 1882 में रचित उपन्यास 'आनंदमठ' इसी विद्रोह की घटना पर आधारित है और उन्हीं के बलिदानों को समर्पित था। वह विश्व प्रसिद्ध गीत 'वंदे मातरम' जो आज भी देशवासियों को राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत करने के लिए पर्याप्त है।

हेमंत गुप्ता की फिल्म 'आनंदमठ' में पृथ्वीराज कपूर, भारत भूषण, गीता बाली, प्रदीप कुमार और अजीत मुख् भूमिका में हैं। प्रदीप कुमार ने हिंदी सिनेमा में इसी फिल्म से अपनी शुरुआत की थी। संगीतकार हेमंत कुमार की भी यह पहली हिंदी फिल्म थी। इससे कुछ समय ही पहले हेमंत कुमार बंगाली सिनेमा में काम कर चुके थे। लेकिन, हिंदी सिनेमा में करियर शुरू करने के लिए मुंबई चले गए। इस फिल्म के साथ हेमंत कुमार ने एस मुखर्जी के फिलिमस्त्रान स्टूडियो के साथ संगीतकार के रूप में नागिन में एक से बढ़कर एक गीत दिए थे।

हिंदी के दर्शकों को टॉलीवुड के नाम से मशहूर तेलुगु फिल्म उद्योग ने बाहुबली के माध्यम से पहली बार भारी संख्या में आकर्षित किया। यह सिलसिला अब सुनामी की तरह बॉलीवुड को अपने आगोश में ले रहा है। 'आरआरआर' के बाद प्रयोग, रचनात्मकता एवं नई कथाओं का अंबार सा लग चुका है और '1770' इस सिलसिले को भव्य रूप से आगे बढ़ाने जा रही है। असल में अश्विन गंगारजू के निर्देशन में '1770' नामक एक बहुभाषी फिल्म प्रदर्शित होने वाली है, जिसका मोशन पोस्टर हाल ही में प्रदर्शित हुआ। तेलुगु समेत बंगाली, हिन्दी, तमिल, मलयालम समेत अनेक भाषाओं में बनने वाली इस फिल्म की शूटिंग हैदराबाद, पब्लिक बंगाल और लंदन में की जाएगी। इसकी सफलता का सबसे बड़ा घटक यह है कि इसे 'बाहुबली' और 'आरआरआर' जैसे विश्वप्रसिद्ध कृति रचने वाले वी विजयेन्द्र प्रसाद ने लिखा है, जिन्हें राजस्वभा में भी मनीनोत किया गया है।



दीप प्रज्वलन

कैप का शुभारंभ श्रीअरविंदो एवं श्रीमां के चित्रों पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर बाएं से अरविंदो सोसायटी मप्र के अध्यक्ष मनोज शर्मा, मुख्यमंत्री मप्र मोहन यादव के सांस्कृतिक सलाहकार श्रीराम तिवारी, राष्ट्रवादी कांग्रेस के प्रवक्ता बृजमोहन श्रीवास्तव, प्रधान आयकर आयुक्त श्रीमती सृजनी मोहंती एवं अरविंदो स्कूल भोपाल की डॉक्टर श्रीमती रश्मि त्रिवेदी चित्र में दिखाई दे रही हैं।

हेल्थ चेकअप कैप में 13 सौ से अधिक जांच हुई



जर्नलिस्ट क्लब के अध्यक्ष दिनेश गुप्ता ने अरविंदो अस्पताल के फाउंडर अध्यक्ष डॉ विनोद भंडारी का पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। साथ में अरविंदो यूनिवर्सिटी की चांसलर डॉ मंजुश्री भंडारी।



भोपाल दक्षिण पश्चिम विधानसभा के भाजपा विधायक भगवान दास सबनानी अपना चेकअप करवाते हुए। चित्र में दैनिक सुबह सवेरे के प्रधान संपादक उमेश त्रिवेदी, कार्यकारी प्रधान संपादक अजय बोकिल, संपादक विनोद तिवारी एवं क्षेत्रीय पार्षद बृजुला सचान दिखाई दे रहे हैं। कार्यक्रम में क्षेत्रीय विधायक भगवान दास सबनानी, दैनिक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक अरुण पटेल, अरविंदो सोसायटी भोपाल के सचिव सतीश चित्वा, जर्नलिस्ट क्लब के महासचिव सुनील श्रीवास्तव, न्यूज 18 मप्र छा के प्रमुख सुधीर दीक्षित बड़ी संख्या में पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

महिलाओं के सर्वाङ्कल कैंसर, पेप्समेयर और लीवर की मुफ्त में हुई खास जांच

भोपाल। तुलसी नगर स्थित अरविंदो स्कूल में शनिवार को वृहद हेल्थ चेकअप कैप का आयोजन किया गया। कैप में 13 सौ से अधिक रोगियों की जांच की गई। अरविंदो सोसायटी भोपाल, अरविंदो स्कूल भोपाल अरविंदो अस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज इंदौर व जर्नलिस्ट क्लब भोपाल द्वारा हेल्थ चेकअप कैप आयोजित किया गया है। इस कैप में हृदय, लीवर, कैंसर जैसे रोगों की मुफ्त जांच की गई और परीक्षण कराने वालों को आगे के उपचार की सलाह दी गई। कैप में स्नान कैंसर पेप स्मार्थर सहित स्त्रीजनित रोगों की विशेष जांच की गई। कार्यक्रम सुबह 10.30 बजे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के सांस्कृतिक सलाहकार श्री राम तिवारी एवं भारतीय

राजस्व सेवा की अधिकारी मुख्य आयकर आयुक्त श्रीमती सृजनी मोहंती के कर कमलों से प्रारंभ हुआ। हेल्थ चेकअप कैप में मेडिकल के 112, सर्जरी के 46, पेट एवं लीवर संबंधी रोगों के 78, ENT के 52, आंखों के 110, छिमेटोलॉजी के 38, एंडोक्रिनोलॉजी के 42, रेडियोलॉजी के 57, मरीजों सहित करीब 1314 रोगों का चेकअप किया गया। प्रत्येक मरीज सामान्य रक्तचाप और शूगर की भी जांच की गई। हेल्थ चेकअप कैप में खासतौर पर होने वाली महंगी जांच जैसे महिलाओं की पेप्समेयर, सर्वाङ्कल कैंसर की जांच, सहित विभिन्न पैथोलॉजी जांच शामिल थी। कैप शाम 5 बजे तक चला।



लीवर एवं पेट संबंधी बीमारियों का पता लगाने वाली अत्याधुनिक मशीन के बारे में जानकारी श्रीमती मोहंती देते हुए डॉ विनोद भंडारी। इस अवसर पर अरविंदो स्कूल की प्राचार्य श्रीमती नलिनी पटेल भी उपस्थित थी।



दैनिक सुबह सवेरे के प्रधान संपादक एवं अरविंदो सोसायटी भोपाल के अध्यक्ष उमेश त्रिवेदी कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सृजनी मोहंती का पुष्प गुच्छ से स्वागत करते हुए।



हेल्थ चेकअप

भारतीय राजस्व सेवा की अधिकारी मुख्य आयकर आयुक्त श्रीमती मोहंती हेल्थ चेकअप कैप का उद्घाटन करते हुए। साथ में अरविंदो अस्पताल के फाउंडर अध्यक्ष डॉ.विनोद भंडारी भी मौजूद हैं।